भोजपुरी

कथा-कहानी

अनियतकालिक पत्रिका

वार्षिकांक
1997

संपादक
प्रो. बजकिशोर

एह अंक में–

सूर्यदेव पाठक 'पराग'
के एगारह गो कहानी

भोजपुरी साहित्य संस्थान

वर्ष 1997

भोजपुरी
कथा – कहानी

अनियकालिक कहानी प्रधान पत्रिका : मूल्य : बीस रुपया

- *परामर्श*
  डॉ० विवेकी राय
  श्री राजबल्लभ सिंह
- *संपादक*
  प्रो. बजकिशोर
- *सम्पादक मण्डल*
  डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय'
  कृष्णानंद कृष्ण
  भगवती प्रसाद द्विवेदी
  दीप्ति
  जीतेन्द्र वर्मा
- *प्रबन्ध सम्पादक*
  रूपश्री

पत्रिका सम्बन्धी सब काम अवैतनिक बा ।

निवेदन

केहू एक रचनाकार पर केन्द्रित 'भोजपुरी कथा – कहानी' के अंक साल में एगो भा दू गो निकाले के योजना चल रहल बा। कहानी, उपन्यास, लघुकथा आ नाटक विधा शामिल होई । भोजपुरी के नया - पुरान केहू साहित्यकार एह योजना में शरीक हो सकत बा। अपना पाण्डुलिपि का सँगे संस्थान का कार्यालय में आवे के सादर आमंत्रण बा ।

–प्रो० बजकिशोर
संपादक : भोजपुरी कथा कहानी
भोजपुरी साहित्य संस्थान
श्रीभवन, महम्मदपुर लेन, महेन्द्रू
पटना - 6, दूरभाष 671180

www.bhojpurisahityangan.com

दू शब्द प्रकाशक के

भोजपुरी भाषा के घोर उपेक्षा हो रहल बा सरकारी स्तर पर । आजादी के पचास बरिस बीतला का बावजूद करोड़न लोगन के मातृभाषा भोजपुरी के चीन्हा-परिचे सरकार से नइखे हो सकल । बिहार, उत्तरप्रदेश आ मध्यप्रदेश में भोजपुरी क्षेत्र फइलल बा । अपना भाषा, साहित्य आ संस्कृति के रक्षा करे के, बढ़न्ती करे के हक बा भोजपुरिया का । भोजपुरी भाषी क्षेत्र के विकासो ठमकल बा काहे कि एजवाँ के राजनेता लोगन का एह तरफ झाँकहूँ के सवाँस नइखे मिलत । 'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल ।' आ, जब मूले गायब बा त आउर विकास के बाते कइल बेमानी बा । एकर दोष एह क्षेत्र के लोगों के बा । जनता एह बात के नइखे समुझ सकल कि भोजपुरी भाषा आ साहित्य के उन्नति ओकरा अस्मिता के, ओकरा आत्मसम्मान के, आ ओकरा संस्कृतिक-राजनीतिक पहिचान के कुंजी बा । भोजपुरी आन्दोलन का अबहीं ढेर चले के पड़ी तब जाके लोगन के लगावल एकरा से हो पाई । सन्तोष बा कि गँवहीं गँवें भोजपुरी के गाड़ी चल रहल बिआ आ ऊ दिन दूर नइखे जब एकरा साहित्य के पहिचान ओह सभ लोग का जाने-माने के पड़ी जे जान-बूझ के भा ना जनला गुने आँख मूँदले अबहीं ले पड़ल रहल बा ।

भोजपुरी साहित्य के प्रकाशन आज के महँगाई में दहकत अंगारा पर चलला का बराबर बा । एकर बोझा मुख्य रूप से लेखके का उठावे के पड़त बा। सेवा भाव से रचनाकार रचतो बा, छापतो बा, आ छाप के बाँटतो बा। बिक्री के इन्तजाम नइखे हो पावल, खरीददार तक पहुँचे के पगडंडी नइखे बन पावल अबहीं ले । सहकारी प्रयास के जरूरत बा एह खातिर ।

एही सब दिक्कतन में **'भोजपुरी कथा कहानी'** के एगो अंक सूर्यदेव पाठक 'पराग' जी के कहानियन के लेके पाठकन का हाथ में जा रहल बा। एह में एक खण्ड में पराग के कहानियन पर विचार कइल गइल बा. आ दोसरा खण्ड में उनकर एगारह गो कहानियन के दिहल गइल बा । ओही विशेषांक के पुस्तकाकार रूप ई **'प्रश्नचिन्ह'** ह। पाठकन का पराग जी के कहानी के समुझे-बूझे आ रस लेवे में जरूर मदद मिली । 'भोजपुरी कथा कहानी' के अइसन विशेषांक आ फेरू किताब निकाले के सिलसिला भरसक चलत रही । बस रउआ हियाव बढ़ावत रही त **भोजपुरी साहित्य संस्थानो** के सकान हो जाई, आ पहाड़ जस ई कामो सपरत रही ।

—रूपश्री

अध्यक्ष, भोजपुरी साहित्य संस्थान

महेन्द्रू, पटना-800 006

www.bhojpurisahityangan.com

कहानीकार

1. नाम : सूर्यदेव पाठक 'पराग'
2. पिता का नाम : स्व० लक्ष्मण पाठक
3. जन्म तिथि : 23. 07. 1943 (श्रावण कृष्ण सप्तमी, शुक्रवार, 2000 सं)
4. जन्म–स्थान : बगौरा, जिला- सीवान (बिहार)
5. शिक्षा : एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी), आचार्य (द्वय), बी० एड्०, काव्यतीर्थ, साहित्यरत्न.
6. सम्मान/पुरस्कार : (i) साहित्य कला विद्यालंकार (1989), (ii) विद्या वाचस्पति (पी-एच०डी०) (1993) (iii) सम्पादक रत्न (1994), (iv) लघुकथा मार्त्तण्ड (1995), (v) साहित्यश्री (1997), (vi) काव्य-शास्त्री (1997), (vii) रघुवंश नारायण सम्मान (1996) (viii) अछूत (भोजपुरी उपन्यास पर 'अभय आनन्द पुरस्कार (1994)
7. प्रकाशित पुस्तक : (क) **भोजपुरी के मौलिक पुस्तक:** (i) श्री हीरो चरितमानस (हास्यव्यंग्यकाव्य), (ii) अछूत (उपन्यास), (iii) जंजीर (नाटक), (iv) 'प्रश्नचिन्ह कहानी संकलन) (ख) भोजपुरी के सम्पादित पुस्तक : (v) काव्या (205 कवयिन के कविता संग्रह), (vi) तिरमिरी (89 लघुकथाकारन के लघुकथा संग्रह), (vii) श्री अक्षयवर दीक्षित : व्यक्तित्व-कृतित्व (ग) **हिन्दी के मौलिक पुस्तक :** (viii) समय का सच (नवगीत संग्रह) एकरा अलावा लगभग तीन दर्जन पुस्तकन में हिन्दी भोजपुरी के गद्य-पद्य रचना संकलित।
8. पत्रिका–सम्पादन : (i) सम्पादक, बिगुल (भो० त्रै०), (ii) सह सम्पादन, भोजपुरी लहर (अ० का०) (iii) सम्पादक मण्डल सदस्य, प्राच्यप्रभा (हिन्दी मासिक)
9. संगठन: (i) प्रकाशन मंत्री, अ० भा० भोजपुरी साहित्य सम्मेलन (तेरहवाँ चउदहवाँ सत्र), सचिव, सीवान जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन
10. पद/सम्पर्क–सूत्र : अध्यापक, उच्च विद्यालय, मढ़ौरा- 841418. सारण, (बिहार)

–रूचिका रंजन
सचिव, भोजपुरी साहित्य संस्थान, पटना

www.bhojpurisahityangan.com

विचार

1. झीनी - झीनी बिनी चदरिया
(कहानी के शिल्प आ परागजी के कहानी)
❑ प्रो. ब्रजकिशोर..... 8
2. प्रतिबद्धता आ पराग जी के कहानी
❑ नागेन्द्र प्रसाद सिंह..... 12
3. जिनिगी से सीधा सरोकार के कहानी
❑ कृष्णानन्द कृष्ण..... 19
4. सामाजिक वेवस्था पर प्रश्नचिन्ह
❑ भगवती प्रसाद द्विवेदी..... 22
5. मानवीय संवेदना के कहानी
❑ जीतेन्द्र वर्मा..... 24
6. हमार रचना प्रक्रिया
❑ सूर्यदेव पाठक पराग..... 26

कहानी

1. प्रश्नचिन्ह 33
2. टूटत रिश्ता 36
3. हादसा 38
4. देश खातिर 41
5. विधवा 44
6. जवान साधु 47
7. रात बरसात के 50
8. भिखारिन के राजकुमार 52
9. सोना के परख 55
10. तिकोन 58
11. संकल्प 60

www.bhojpurisahityangan.com

झीनी-झीनी बिनी चदरिया

❑ प्रो. बजकिशोर

भोजपुरी साहित्य के कहानी विधा भी अब काफी समृद्ध हो चुकल बा आ अब कवनो भारतीय भाषा का सोझा ई माथ उँचा रख के ठाढ़ हो सकति बा । पछिला पचास- साठ साल से लगातार कहानी-रचना हो रहल बा। काफी सकेता में रहलो पर हर साल एक-दू दर्जन कहानी-संग्रह लकदक से प्रकाश में आ रहल बा । अब समय आ गइल बा कि भोजपुरी कहानियन पर विस्तार से बात कइल जा सके

कहानी त जिनगी ह । आम भा खास आदमी सभ केहू रोजो कवनो ना कवनो कहानी खुद जी रहल बा । हरेक आदमी का चेहरा का रेघारी में कवनो-ना-कवनो कहानी लुकाइल बा। रचनाकार तनिको-सा सजग आ संवेदनशील होके तिकवे त ओकरा अगल-बगल सगरे कहानी के मसाला छिटाइल लउकी । एह कच्चा माल के प्रोसेसिंग कके उम्दा कहानी का रूप में उत्पाद बना लेवे के कला कहानीकार के आपन खासियत होला । जे जतने एह कला में माहिर होई, ओकर उत्पाद, ओकर कहानी ओतने बढ़िया बन पाई । ई कच्चा माल अपने आप में घटना भर होला, आ घटना कहानी के आधार त बन जाले बाकिर खुद कहानी ना हो सके ।

कहानी बनो-एह खातिर कईगो तत्त्व जरूरी बा, जइसे कथानक, कथ्य, शिल्प, चरित्र, कथोपकथन आदि । कथानक घटनन से बनल एगो ढाँचा होला, सिरखार होला जवना पर कहानीकार अपना मन का मुताबिक, अपना कथ्य का अनुरूप मांस-त्वचा आदि चढ़ावेला आ अपना कारीगरी से मनचाहा रंग-रूप देके ओकरा के जिअतार बनावेला, अतना सजीव बना देला कि पाठक का ओकरा से तादात्म्य हो जाला । इहे तादात्म्य भाव कहानी के संप्रेषणीयता ह, आ, ई गुण जतने आवेला ओतने ऊ कहानी सफल मानल जाले।

कथानक घटना, पात्र आ परिवेश से तइयार होला । कथ्य चरित्र के आ काल विशेष में घटत घंटनन के दिशा देला । कथ्य ऊ बाहरी बल हवे जवन कहानीकार के मन से उपजेला आ घटना भा पात्र पर लाग के अपना दिशा में गतिशील करेके कोशिश करेला । जब कथानक घटना आ पात्रन का चरित्र का माध्यम से कथ्य का दिशा में गतिशील हो जाला त कहानी बने लागेले ।

परिवेश उद्दीपन के काम करेला। जब कहानी बने लागेले त कहानीकार के दिमाग कुम्हार का चाक खाली घूमत रहेला आ ठीक ओकरा बीच में कथानक के लोंदा पर ओकर कलम रूपी सधल अंगुरी मनचाहा स्वरूप में सृजन करे खातिर एकाग्र होके जुटल रहेले । एकरा के, एह कला के, एह कौशल के विद्वान लोग शिल्प आ एह सृजन-प्रक्रिया के उपचार भा ट्रीटमेंट कहेला । ई शिल्प आ कथानक के ट्रीटमेंट देवे के कौशल कहानीकार के आपन निजी खासियत होला । एह कुल्ही के सही-सही संयोजने से कवनो उत्तम कोटि के कहानी बनेले ।

कहल बानू कि 'माटी कहे कुम्हार से, तूँ का गूँथे मोय, एक दिन ऐसा आयेगा, मै गूँथूँगी तोय !' बस, अइसन स्थिति कथानक आ कहानीकारो का बीचे आ जाले । ई चुनौती दूनू ओर से होखे लागेला आ तब बड़ा

www.bhojpurisahityangan.com

मुश्किल हो जाला कबो-कबो कथानक के बान्ह-छान्ह के ढ़ाँचा यानी फ्रेम का भीतर ले आवे में बाकिर एक बरे जब फ्रेम बन गइल त फेर काम सहज हो जाला ।

कहानीकार के भोगल यथार्थ बहुते व्याकुल कर देला ओकरा मन के, मथ के राखि देला । एही व्याकुलता का भीतर से, एही मन्थन के परिणति होला कथानक रूपी घट में भरल **कथ्य** आ **थीम** रूपी अमृत । एह अमृत के ओह लोग का लगे पहुँचावे के उत्तरदायित्व भी कहानीकार के कान्हा पर होला, जे ओकर सही अधिकारी बा । एकरा खातिर कहानीकार का मोहिनी रूप धरे के पड़ेला-भाषा आ भाषागत विशिष्टता का सँगे **संप्रेषणीयता** के रूप एही उजागर होला । ई शिल्प आ शैली के अंग हवे । कथ्य ठीक ढ़ंग से पाठक का मन तक ले-मरम तक ले तबे पहुँच सकेला । एह सबका बीचे कहानीकार का पूरा तटस्थ रहे के पड़ेला । ऊ अमृत खुदे पीए के ललक पाली त गड़बड़ हो जाई । ऊ धारा का सँगे वहे लागी, ओकर 'हम' हावी होखे लागी, आ, चुपके-चुपके कथ्य के सम्प्रेषण करे के बदले ऊ अमृत के काँड़ी देवे के प्रयास में लाग जाई । एही से ओकर तटस्थ भइल जरूरी होला कहानी में । कतही ई ना झलके के चाही कि कहानीकार आपन विचार, आपन बात बलपूर्वक पाठक का मन के मरीज बूझे के दवाई खानी घोंटवा रहल बा । कहानी में कहानीकार के सरछात उपस्थिति अकुशलता के चिन्हासी मानल जाला । एही से कथाकार के अपना विचार के छद्म वेश में राखे के मजबूरी हो जाला । **कथोपकथन** एह काम के आसान बनावेला आ सँगे-सँगे कथानक के धारदार भी ।

कथानक का विस्तारों के एगो क्रम होला । संगीत कां सुर खानी एहू में आरोह-अवरोह होला, द्रुत आ विलम्बित ताल होला, यानी, आमतौर पर कथानक के प्रारम्भ, मध्य आ अन्त यानी चरम बिन्दु । आजुकाल्ह कहानी चरम बिन्दुओं से शुरू हो सकति बा, चरम बिन्दु बीचो में आ सकत बा, भा कहानी का अन्त में भेंटा सकत बा। ई **शिल्प** के आ **शैली** के खेल हवे । आपन-आपन शैली, आपन-आपन शिल्प! कथानक के मांग जइसन होई, ओकरा उपचार के जवन तरीका तय कइल जाई, ओकरे अनुसार ओकर **बुनावट** होई । एह बुनावट में कहानीकार के भाषा मददगार होले । शिल्प आ भाषा दूनू मिलि के बुनावट के रूप-रंग प्रदान करेला । एह में से कवनो कमजोर होई त कसाव में कमी आ जाई ।

आज के कहानी के इहे कहानी बा । इहे ओकरा स्वरूप के निखार देवे वाला सौन्दर्य-प्रसाधन बाड़ेस । मोटा-मोटी तौर पर भोजपुरी कहानी के शिल्प, शैली आ रचना-प्रक्रिया के एह रूप में बतलावल आ समझावल जा सकत बा । एही सब बातन के सोझा राख के कवनो कहानीकार के कहानियन पर विचार कइल जा सकत बा, ओकरा सफलता के आँकल जा सकत बा, ओकर मूल्यांकन कइल जा सकल बा ।

एगो बात आउर । कुम्हार कवनो माटी से घइला ना बनावे । कवना माटी से घड़ा बानी, कवना से पतुकी-एकर पहिचान ओकरा होला । माटी खन के ऊ ले आवेला आ पानी मिला के, गूँथ-गूँथ के माल तइयार करेला। चाक पर चढ़ावे का पहिले माटी के पुरहर प्रोसेसिंग करे के पड़ेला । हर घटना का कोख में कहानी के बीज भले होखे बाकिर ऊ स्वस्थ-सुन्दर

www.bhojpurisahityangan.com

कहानी के जनमो दे सके हरमेसा अइसनका ना हो पावे । एह से कहानीकार जे कहे के चाहत बा, जे ओकर कथ्य बा, ओकरा के वहन करे लायक, ओकरा के पाले-पोसे लायक घटनन के बीछे-बीछे के पड़ेला । कई एक घटनन के लहर-पर-लहर जब जवराला तब जाके कथानक के एगो प्रवाह बनेला! एह सब बिनियाछिया खातिर कहानीकार का लगे कवनो फरमूला ना होखे । जब कवनो फरमूला में, गणित का सूत्र में डाल के कहानीकार कहानी कहे लागेला, रचे लागेला त ओकरा लेखनी से घटिया कहानी के जनम होला-लूल्ह-लांगर आ विकृत सन्तान पैदा होले ।

हमरा अतना कहे के मतलब अतने बा कि कहानी पढ़ के ओकर आनन्द उठावल सरल-सहज प्रक्रिया हो सकति बा बाकिर ओकरा के शिल्प आ कहानी-कला का दृष्टि से परखल-जाँचल बहुते कठिन होला । फरखी के आपन पूर्वाग्रह-दुराग्रह भइल त मूल्यांकन आउरो भ्रम पैदा करे लागेला। सूर्य देव पाठक 'पराग' के जे एगारह गो कहानी एह संग्रह **'प्रश्नचिन्ह'** में संकलित बा, ओकरा पर पाठक खुद विचार करिहन त ऊपर कइल विवेचन का आधार पर कई एक गो बात आ खासियत साफ-साफ अपनही लउके लागी। जइसे,

(1) एह में कुल्ही कहानियन के आकार काफी छोट बा। कवनो आठ-दस पेज के विस्तार वाली कहानी नइखे । दू-तीन पेज में कहानी खतम। एकर कारण बा घटनम के चुनाव। अनेक घटनन के मिलाके कथानक के क्रमिक विकास होला तब कहानी फइलेले आ ओह में विश्लेषणात्मक उपचार के गुंजाइश ज्यादा होला । अइसन विस्तार आ कथानक का उपचार से पराग जी बचे के कोशिश कइले बाड़न। ऊ कवनो एगो मुख्य घटना के चुनके ओकरे बल पर कहानी के ताना-बाना बन देले बाड़न । **'प्रश्नचिन्ह'** में मुख्य घटना चरम बिदु का रूप में अन्त में आवत बा । विनय बाबू आ जगत मास्टर के बतकही से जवन प्रश्न चिन्ह मास्टर का मन के डॉवाडोल करत बा, अन्तिम घटना का बाद ऊ खुद उत्तर में बदल जात बा आ प्रश्नचिन्ह घूसखोर क्लर्क विनय का सोझा ठाढ़ हो जात बा । बस कथोपकथन का जरिए कहानी चरम बिन्दु तक ले जात बा । एके-दूगो घटनन के माध्यम से कथ्य के पाठक तक पहुँचावे के हस्तलाघव पराग जी करीब-करीब अपना हर कहानी में देखवले बाड़न । एह से घाटा ई भइल बा कि चरित्रन के जटिलता अत्यन्त सरलीकृत हो गइल बा आ ओकर एगो मुकम्मल चित्र सोझा नइखे आवत । विश्लेषणात्मक उपचार का छूट गइला से कथ्य के बेबाक प्रगटीकरण हो जात बा ।

(2) कहानीकार के मूल स्वर आदर्शवादी बा, जवना का रक्षा खातिर, छोट कथानक एगो नीक हथियार बन गइल बा । **'जवान साधु' विधावा, देश खातिर, सोना के परख,** संकल्प सब आदर्शवादी कहानी बाड़ी स ।

(3) **'टूटत रिश्ता'** जइसन कहानी में मानसिक उलझन के अपना दायरा में अच्छा विश्लेषण भइल बा । ना चहलो पर परिस्थिति आ विवशता बस विघटन के पुर्जा बन जाये में मन कतना बेचारगी आ बेचैनी महसूस करेला-- ई मनोहर का जरिए पाठक तक सहजे पहुँच जात बा ।

(4) **'सोना के परख'** आ **'संकल्प'** जइसन कहानियन में कथ्य के लबेबाक ढ़ंग से सोझे पाठक तक पहुँचावे के कोशिश कइल गइल बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

(5) कहानीकार ई कबूल कइले बा कि '' एमें कतहीं सीधे वर्ग-संघर्ष नइखी देखवले बाकिर हर कहानी में कवनो-ना-कवनो सामाजिक विषमता के पाठकन का सोझा ले आके ओकरा के पाटे का ओर संकेत जरूर कइले बानी।'' यानी, समस्या राख के समाधानो दिहल बा । अइसन शिक्षक भइला का नाते हो गइल बा । शिल्प का दृष्टि से कहानियन के ई कमजोरी मानल जाई ।

(6) कथानक के बुनावट ओही सब परिस्थितियन के उठा के कइल गइल बा जवन आज का जिनगी के हिस्सा हो गइल बा। तेवर में तेजी आ तीखापन नइखे, बाकिर विसंगतियन कि ओर इशारा साफ बा। तेवर त रचनाार का व्यक्तित्व के अंग होला। कहानीकार के शिष्टता आ सौम्यता कहानी का माध्यम से भी झलक रहल बा ।

(7) **'भिखारिन के राजकुमार'** में बाँझ स्त्री का मन के अन्तर्द्वन्द्व के चित्रण ठीक भइल बा । एह कहानी में कथानक के ट्रीटमेंट ज्यादा निखरल बा ।

(8) भाषा के प्रयोग हर कहानी में सावधानी से भइल बा ।

(9) सभ कहानी के शुरूआत आकर्षक बा । चाहे ऊ प्रकृति आ परिवेश के चित्रण से होखे, भा सीधे पात्र का प्रवेश से - आकर्षण बनल रहत बा । अइसही 'अन्त' भी शिल्प का दृष्टि से उचित बा ।

(10) कथानक का कोताही से पात्रन के चरित्र में धुँधलापन झलकत बा। मुकम्मल तस्वीर बने में दिक्कत आवत बा।

(11) कहानियन के पढ़ जाए में कतहीं बाधा नइखें पहुँचत यानी सम्प्रेषण ठीक-ठाक बा ।

(12) **'प्रश्नचिन्ह'** के कहानियन में बेबाक बतकही से काम लिहल बा । कहानी में सपाटबयानी नीक ना मानल जाव बाकिर पराग जी का कहानियन में ई एगो खूबी बन गइल बा ।

सूर्यदेव पाठक 'पराग' एगो बहुआयामी सौम्य व्यक्तित्व के नाँव ह, जे कवि, लेखक, सम्पादक, कहानीकार, संगठनकर्त्ता का रूप में समकर जानल-पहिचानल बा ।

'प्रश्नचिन्ह' के कहानियन से पराग जी के आदर्शवादी यथार्थोन्मुख व्यक्तित्व के सहजे रेखांकित कइल जा सकेला ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

प्रतिबद्धता आ 'पराग' जी के कहानी

❑ नागेन्द्र प्रसाद सिंह

बिहार राज्य का सिवान जिलान्तर्गत बगौरा गाँव के निवासी आ हिन्दी-भोजपुरी के कवि, नाटककार, कहानीकार आ विद्वान श्री सूयदेव पाठक 'पराग' (मध्यवर्गी परिवार में जन्म : 23 जुलाई, 1943 ई.) का एह कहानी संग्रह 'प्रश्नचिन्ह' का पहिले भोजपुरी में 'श्रीहीरो चरितमानस' (काव्य), 'जंजीर' (नाटक सन् 1993 ई.) 'अछूत' (उपन्यास: सन् 1988 ई.) आ हिन्दी में 'समय का सच' (काव्य : सन् 1995 ई.) का अलावे 'तिरमिरी' लघुकथा प्रकाशित हो चुकल बा। भोजपुरी त्रैमासिक 'बिगुल' का संपादन का अलावे 'तिरमिरी' लघुकथा संकलन आ 'काव्या' के संपादन इनकर कुछ उपलब्धि बा, जवन 'पराग' जी के लेखन सातत्य का साथे-साथ इनका अनेकन साहित्य विधा में सफल प्रयास के उजागर करत बा। फिर भी, ई निर्विवाद रूप से कहल जा सकेला कि श्री 'पराग जी मूलत: कवि हउअन ।

एह कहानी-संग्रह में संकलित इनकर 11 (ग्यारह) कहानियन का अलावे 'हमार रचना-प्रक्रिया' नॉव से एगो बढ़िया आलेख संलग्न बा, जवना में बड़ा बारीकी से अपना के समकालीन लांछित प्रतिबद्धता से बँचावत 'पराग' जी लिखत बानी-

'एमें कतहीं सीधे वर्ग-संघर्ष नइखीं देखवले, बाकिर कहानी में कवनो-ना-कवनो सामाजिक विषमता के पाठकन का सोझा ले आ के ओकरा के पाटे का ओर संकेत जरूर कइले बानी। हमरा समझ से आदमी विचारशील प्राणी ह। अगर कवनो समस्या का रू-ब-रू होई, त ओकरा में एगो वैचारिक क्रांति आई। कवनो क्रिया का साक्षत्कार के बाद जवन प्रतिक्रिया होई, ऊहे सामाजिक बदलाव के राह खोजी।

'पराग' जी अपना लेखकीय दृष्टि के कवनो रूप में चेतना का स्तर पर आ अपना वर्ग-जन्म के नैतिक स्तर (genetic status) पर स्वीकार नइखन करत, बलुक एह कहानियन के विषयगत समस्यन के पारिस्थिक (environmental), अनुभूत (experienced) या स्वत: भोगल मनले बाड़न। एह अति सावधान उल्लेख के कारण ई लागत बा कि 'पराग' जी अपना नाँव का साथे प्रगतिशील या 'प्रतिबद्ध' रचनाकार के कवनो लेबुल टाँकल नइखन चाहत। प्रतिबद्धता के बारे में फइलल भ्रम एकरा खातिर जिम्मेवार बा।

प्रतिबद्धता जीवन-दर्शन ह। कवनो विवेकशील प्राणी एह से अछूता ना रह सके । बौद्धिक विकास का साथ एकर विकास उत्तरोत्तर होत रहल बा। ई कवनो देश-काल का सीमा में घेरा के ना रह सके । प्रतिबद्धता अपना मौलिक स्थिति में मानवीय चेतना का अन्दर गतिशील रहेला। मनुष्य के प्रतिबद्धता ओकरा जैविक (genetic) उत्स से जुड़ल रहेला; बाकिर ओकरा चतुर्दिक जवन सामाजिक-आर्थिक क्रिया-प्रतिक्रिया वर्त्तमान रहेला, ओकरो

www.bhojpurisahityangan.com

प्रत्यक्ष आ परोक्ष प्रभाव ओकरा मानस पर संवेदन (Sensation), प्रत्यक्षीकरण (perecption), संवेग, (emotion) द्वारा सीखल (learnt) आ अंकित कइल (recorded) होत रहेला। एह ढंग से अपना जीवन में हर आदमी कुछ खास पैटर्न (pattern) आ श्रृंखला (sequence) में अपना प्रतिबद्धता के आन्तरिक संरचना क लेवेला। अइसन कहल जाय कि हो जाला। जब जइसन अवसर, स्थिति आ स्थान आवेला, ऊ अपना संचित प्रतिबद्धता का सापेक्ष (relevent) रहते हुए आपन प्रतिक्रिया करेला।

प्रतिबद्धता जड़ ना होला; बल्कि सचेतन होला। आदमी के प्रतिबद्धता बढ़ेला आ घटेला, अनुभव-अवसर, परिवेश आ पारिस्थिक (environment) का सापेक्ष। एकरा में संशोधन (correction) आ परिवर्द्धन होला-हर ओह नया अनुभव का साथ, जवन ओकरा जीवन में आवेला। जब कवनो खास अवसर पर, परिवेश आ परिस्थिति में ऊ अपना प्रतिबद्धता का सापेक्ष प्रतिक्रिया करेला, त ओकरा सुखद आ दुखद परिणाम से ऊ सीखेला आ आवश्यकतानुसार अपना अन्तर्निहित प्रतिबद्धता के कुछ संशोधित करेला, जवन विधायक (positive) आ निषेधक (negative) दूनू-दिशा में हो सकेला। ई प्रक्रिया हर आदमी का जीवनपर्यन्त अनवरत चलत रहेला, यद्यपि एकर स्पष्ट आभास आदमी का होखे भा ना होखे। एकर आभास ओह आदमी का जादे होला, जे सामान्य आदमी से अधिका सचेत, शिक्षित आ अनुभवशील होला।

प्रतिबद्धता पर जैविक (genetic) गुण-सूत्र के प्रभाव आनुवंशिकता (inheritance) से मिलेला। एकरे के आम आदमी का भाषा में कहल जाला कि 'ई त उनका खून में बा' आ 'ई त उनकर खानदानी (विरासत) ह'। गुण सूत्र के संतरण डार्विन के विकासवाद आ ओकरा प भइल बाद का शोधन के परिणामन का परिप्रेक्ष्य में देखल जा सकेला। एगो धनी व्यवसायी, भूमिपति, पढ़ल-लिखल पारंपरिक मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी, किसान, मजदूर, अनपढ़ खेत-मजदूर के संतानन के स्वभाव, रहन-सहन आ दोसर-दोसर सामाजिक क्रिया-प्रतिक्रिया में स्पष्ट रूप से कुछ-ना-कुछ अन्तर परिलक्षित होला। विभिन्न कारणन से एह सामान्य अन्विति से भिन्न सामाजिक आचरण अपवाद का रूप में समाज में मिलेला, जवना खातिर कहल जाला-'कउआ चले हंस के चाल' भा 'देसी मुर्गी बिलायती बोल' आ 'बाप के नाँव साग पात, पूत के नाँव परोरा' आदि। एह अपवाद के कारणन के पड़ताल एगो सामाजिक शोध के विषय बन सकेला। गुण-सूत्र का कारण आदमी में प्रारंभिक संवेग (primar instinct), जइसे-प्रेम, क्रोध आदि, आ त्वरा (temper) आदि देखल जाला ।

प्रतिबद्धता पर पारिस्थिकी (environment) के भी प्रभाव पड़ेला। ठण्ढा आ गर्म देश, गाँव आ नगर, सागर भा नदी का तीर आ पहाड़ी पर रहेवालन के प्रतिबद्धता में स्पष्ट अन्तर मिली। ई अन्तर आदमी के उच्चारण, पसंदगी-नापसंदगी भा दोसरो-दोसरो विषयन के आकलन कइला पर स्पष्ट झलक जाई ।

सामाजिक संरचना भी आदमी के प्रतिबद्धता के बहुत बड़ कारण बन के आवेला।एह में परिवार, पास-पड़ोस, विद्यालय, खेल के मैदान, साथी-संघाती, जाति-धर्म, संघ-संस्था, राजनैतिक पार्टी, धार्मिक संस्थान, मंदिर-मस्जिद-गिरजा आदि के बड़हन हाथ होला ।समाज विभिन्न वर्गन में बँटल बा । हर वर्ग

www.bhojpurisahityangan.com

के आपन खास विचारधारा, दृष्टिकोण, समस्या आ मूल्य-श्रृंखला होला । ओकरा संघर्ष के एगो लमहर परंपरा एकरा के ओह मोकाम तक पहुँचाते रहेला । समाज के हर वर्ग के हित दोसरा से भिन्न होला । सामाजिक उत्पादन का प्रक्रिया में ओह वर्ग के भूमिका एगो युग-विशेष में निश्चित रहेला । ऊ अपना अधिकार आ हक के लड़ाई अपना ढंग से लड़ेला । समाज सामाजार्थिक कारकन के प्रमुखता का आधार पर सामान्यत: तीन वर्गन में बँटल मिलेला - उच्चवर्ग, मध्यमवर्ग आ निम्नवर्ग । मार्क्सवादी समाजवैज्ञानिक गहन अध्ययन का बाद एह तीनू वर्ग के चरित्र, रहन-सहन, समस्यन, दृष्टिकोण, विचारधारा, गुण-दोष, संघर्षशीलता आ उत्पादन का प्रक्रिया में भागीदारी आ संबंध का विषय में निरूपण क दिहले बाड़न, जवन देश-काल के भिन्नता से थोड़ा-बहुत भिन्नता का साथे सामान्यत: एके जइसन होला । 'उत्पादन के साधनन पर स्वामीत्व' पावल आ ओकरा बल पर 'राजसत्ता पर अधिकार-प्रत्यक्ष आ परोक्ष रूप में-पावल,, हर वर्ग के प्रारंभिक हित ह। एही आधार पर सामंतवाद, पूंजीवाद आ समाजवाद के व्यवस्था बनेला । हर व्यवस्था के आपन वर्गीय प्रतिबद्धता रहेला । भारत जइसन विशाल, पुरातन, बहुआयामी देश के वर्गीय व्यवस्था में वर्णाश्रित समाज, बहुभाषिक समुदाय, बहु-धार्मिक विश्वास, सांस्कृतिक बहुरूपता आ विकास के चरण के भिन्नता का कारण सामाजिक संरचना के विविध रूप बन गइल बा, जवन अपना में अतना संश्लिष्ट (complex) बा कि निश्चयपूर्वक एह समाज के कवनो आदमी के अलगा क के ओकरा प्रतिबद्धता के रेघरिआवल कठिन काम बा । एह विकट परिस्थिति में केहू के प्रतिबद्धता पर बेबाक टिप्पणी कइल कठिन बा ।

जइसे-जइसे उमिर बढ़ेला, तइसे-तइसे आदमी विधिवत् भा अनौपचारिक रूप में शिक्षित होखे लागेला । एह दौरान ऊ बहुत बात अर्जित करेला आ आपन प्रतिबद्धता के इमारत खड़ा करेला । शिक्षा आदमी के संस्कार करेला। एह संस्कार का क्रम में ऊ वर्गीय प्रतिबद्धता के एगो सीमा तक अन्तर्वर्गीय बनावेला । आदमी एही दौरान अपना के वर्गान्तरित (declass) करेला, बाकिर ई काम कबहूँ अपना संपूर्णता (totality) में ना हो पावे -भलेही ऊ स्थिति - क्रम बदल लेवेला आ जब अवसर के तकाजा होला त ऊ नीचे से आपन सुसुप्तावस्था छोड़ के ऊपर आ जाला । अर्जित प्रतिबद्धता हरमेसा दोयम दरजा के प्रतिबद्धता मानल जाला । ई साँच बा कि एह आधुनिक भारतीय समाज में लगभग 90 प्रतिशत आदमी एही अर्जित प्रतिबद्धता के अभ्यासी बन के रह गइल बा, जवना का पीछे लमहर ऐतिहासिक कारण बा । भारतीय राजनीति के दुर्दशा के ई एगो महत्त्वपूर्ण कारण बन के रह गइल बा ।

प्रतिबद्धता के बने में परिस्थिति (situation) के लमहर हाथ होला । हर आदमी अपना जीवन में एक से अधिका बेर अइसनको परिस्थिति में घेरा जाला, जब ओकर पहिले से बनल, पलात-पोसात प्रतिबद्धता भयानक रूप से मार खा जाला आ ऊ परिस्थिति का अनुकूल आपन कुछ प्रतिबद्धता ताखा पर राख के नया प्रतिबद्धता विकसित क लेला । समाज में गरीब घर के नौकरिहा के घुसखोर बनत, बलात्कार का बाद बेश्या बनत, हरिजन अफसर के हरिजन पर अत्याचार करत आदि जइसन उदाहरण देखल जा सकेला । अइसन अनेक दृष्टि से प्रतिबद्धता के सामग्री, प्रक्रिया आ बदलाव के स्थितियन

www.bhojpurisahityangan.com

पर विचार कइल जा सकेला ।

चूँकि हर आदमी के प्रतिबद्धता ओकर व्यकितगत (personal) होला आ ऊ गतिशील होला, एह से ओकरा में द्वन्द्वात्मक नियम (law of dilects) लागू होला । ऊ सतत् संघर्षशील (strugling) होला । ओकरा में वर्त्तमान (existing) समान स्वभाववालन (homo-genious) आ विपरीत स्वभाववाला (hetro-genious) प्रतिबद्धता के कारकन का बीच संघर्ष चलत रहेला । कुछ दिन का बाद, लगभग 50 बरिस के उमिर पार कइला का बाद, एह संघर्ष में धीमापन आ जाला, बाकिर एह संघर्ष के अन्त कबहूँ ना होखे ।

आदमी बड़ चालाक जीव ह । ऊ जतना, जवन आ जइसन बा, ओकरा के देखावे के अवसर अइला पर ऊ अपना विवेक के बड़ा बुद्धिमानी से छिपावे में माहिर होला । एही से ऊ अपना प्रतिबद्धता के भी छिपा लेला आ ओकरा बदला कुछ अइसन आभास देला, जवना से दोसर प्रतिबद्धता व्यक्त हो । एह काम में जे जतने पढ़ल-लिखल, खेलल-खाइल, बिगड़ल-बनल होला, ऊ ओतने सफाई से ई काम करेला । एह काम के ओह लोग में से कुछ लोग जोर-जोर से चिल्ला के घोषणो करेला, बाकिर बाघ का खाल में सियरा चिनहाईए जाला ।

प्रतिबद्धता आ पक्षधरता एक-दोसरा से जुड़ल रहेवाला प्रत्यय (concept) ह। पक्षधरता (taking a particular position) प्रतिबद्धता के व्यक्त (exposed) स्वरूप ह, बाकिर कभी-कभी तात्कालिकता, न्यायप्रियता, सामाजिक अपेक्षा भा परिस्थिति के विवसता का कारण भी पक्षधरता स्वाभाविक (natural) रूप से दिखाई पड़ेला । एह से कहल जा सकेला कि व्यक्ति के मूलभूत (basic) प्रतिबद्धता का अलावे सामयिक अर्जित अनुभूति भी पक्षधरता के कारक बन जाला आ अइसन पक्षधरता स्थायी ना हो के परिवर्त्तनशील भी हो जा सकेला । जवना पक्षधरता का साथ कवनो जीवन-दर्शन के वायदा जुड़ल ना रहे, ओकर अइसन हस्र भइल निश्चित होला ।

समाज का संरचना आ वर्गीय बनावट का अनुसार हर वर्ग - उच्च उच्च, निम्न उच्च, उच्च मध्यम, निम्न मध्यम, उच्च निम्न आ निम्न निम्न - के प्रतिबद्धता भिन्न-भिन्न बन जाला । सभ वर्ग अपना प्रतिबद्धता का इर्द-गिर्द घूमत रहेला; बाकिर समाज के मध्यम वर्ग, खास क के निम्न मध्यम वर्ग, अपना अवसरवादिता के चारित्रिक विशेषता का कारण आपन प्रतिबद्धता समय-समय पर बदलत, छिपावत रहेला आ भीतर-बाहर संघर्षशील रहेला ।

प्रतिबद्धता के अभिव्यक्ति के तौर-तरीका भी बहुत महत्त्वपूर्ण सामाजिक वस्तु ह । अभिव्यक्ति के कलात्मकता का अभाव में ई नारेबाजी आ प्रचार-सामग्री बन जाला, बाकिर ओकरा से कवनो सामाजिक शुभ (social good) के अपेक्षा ना कइल जा सके ।

साहित्यकार भी त मूलत: आदमिये होला । एह से ओकरा में भी समाज के कवनो दोसरा आदमी लेखा ही प्रतिबद्धता भइल अनिवार्य होला । साहित्यकार भी आदमी के संतान ह, जवना में जैविक गुण-सूत्र रहल अनिवार्य बा । ऊ समाज में रहेला, एह से ओकरा में समाजार्थिक वर्ग -चेतना का अनुकूल कुछ प्रतिबद्धता भइल आवश्यक होई । प्रतिबद्धता-विहीन साहित्यकार कल्पनातीत (unimaginable) होला । जब साहित्यकार प्रतिबद्ध भइल, त ओकरा लेखन में प्रतिबद्धता-श्रृंखला के प्रचुरता रही । एह अनिवार्य

www.bhojpurisahityangan.com

अन्तर्निहित प्रतिबद्धता के निरूपण साहित्यकार का वर्ग-जन्म, ओकर सामाजिक नियोजन, ओकर सामाजिक - आर्थिक जीवन के अनुभव आ शिक्षा के आधार पर कइल जा सकेला। एह क्रम में ईहो देखल जा सकेला कि ओकरा में अभिव्यक्ति के क्षमता, शिल्प आ भाषा के अर्जन भइल बा कि ना ।

हर युग के साहित्यकार, बिना कवनो अपवाद के, प्रतिबद्ध रहल बाड़न-- केहू राजसत्ता से, केहू धार्मिक भावना से, केहू मानवीय भा प्राकृतिक सौन्दर्य से, केहू अपना राजनैतिक, नैतिक भा राष्ट्रवाद से आ केहू-केहू सम्पूर्ण मानवता से । वैयक्तिकता साहित्यकार के आपन प्रतिबद्धता होला । उपन्यास, कहानी, लघुकथा, महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीत-गजल के प्रसंग में प्रतिबद्धता व्यवहार्य (applied) रूप में आवेला, जबकि निबंध आ रेखाचित्र, संस्मरण आदि में अधिका सापेक्ष आ मुखर बन के आवेला ।

कथा-साहित्य (उपन्यास, कहानी, लघुकथा) में कथानक आ कथावस्तु के निर्माण, कथा-विकास खातिर परिवेश, परिस्थिति आ अवसरन के निर्माण, कथा-पात्रन के चरित्र के प्रातिनिधिक (representative) निर्माण, शिल्प के गठन, भाषा के चयन, कथा-उद्देश्य के निर्धारण आदि में लेखकीय प्रतिबद्धता के झलक मिलल स्वाभाविक बा ।

आजकल्ह एगो फैशन चलल बा, जवना के तहत अधिकतर साहित्यकार जानबूझ के घोषित करे के सावधानी बरतत बाड़न कि ऊ प्रतिबद्ध नइखन । अइसन लागता कि वामपंथी आ प्रगतिशील साहित्यिक आन्दोलन में वर्गीय प्रतिबद्धता पर जवन अत्यधिक बल दिहल जा रहल बा आ मार्क्सवादी समीक्षा साहित्यकार, प्रतिबद्ध विषय, दृष्टिकोण, उद्देश्य आ भाषा पर वर्गीय चेतना के प्रभाव आ प्रतिबद्धता का संदर्भ में जवन पड़ताल शुरू कइलस, ओकरे ई नकारात्मक (negative) प्रतिक्रिया ह। बाकिर, जब अइसन साहित्यकारन के रचना, जवन प्रकाशित भइला का बाद सामाजिक सम्पत्ति बन जाला, पर एह दृष्टि से विचार होला, त ऊ कहीं-ना-कहीं से प्रतिबद्ध लागत बा । कुछ साहित्यकार बड़ा चतुराई से अपना प्रतिबद्धता आ पक्षधरता के प्रयासपूर्वक गोपन राखे के प्रयत्न करेलन । अपना के छिपावे में ऊ अधिकतर असफल हो के उघार हो जालन । प्रतिबद्ध साहित्यकार भी कबहीं-कबहीं आपन सन्तुलन खो के जुनून में 'नारा' आ 'प्रचार' के सामग्री तइयार करे लागेलन आ जब उनका एह अवदान के साहित्य माने से समाज इनकार करेला, त उनका में निराशा, प्रतिरोध आ प्रत्याक्रमण के जन्म हो जाला ।

भोजपुरी साहित्य में प्रतिबद्धता के तलाश एगो रोचक अनुभव बा । भोजपुरी के पहिल कवि सन्त कबीरदास के कविता में उनकर वर्गीय प्रतिबद्धता परम्परागत मान्यता के विरोध में मुखर बा, संत कवियन, निरगुनिया, सखी सम्प्रदाय के कवियन आ राम-कृष्ण के भक्त कवियन के एगो प्रतिबद्ध श्रृंखला बा । आजादी का लड़ाई का काल के कविता (मुख्यत: प्रात: स्मरणीय रघुवीरनारायण, प्राचार्य मनोरंजन प्रसाद सिन्हा, प्रसिद्धनारायण सिंह आदि) आ नाटक (प्रमुखत: भिखारी ठाकुर, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन आदि) के प्रतिबद्धता स्पष्ट बा । भोजपुरी कथा-साहित्य में प्रतिबद्धता का दिसाई छानबीन कइल अबही बाकी बा ।

भोजपुरी कहानी का विकास में सर्वश्री मधुकर सिंह, जवाहर सिंह,

www.bhojpurisahityangan.com

ऋषीश्वर, रामलखन विद्यार्थी, तैयब हुसैन 'पीड़ित', मिथिलेश्वर, उमाकांत वर्मा, वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय, रामनाथ पाण्डेय, प्रो. ब्रजकिशोर, कृष्णानन्द 'कृष्ण', चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, सुरेश कांटक, स्वर्णकिरण जइसन पचासो नाँव बा, जवन वर्गीय प्रतिबद्धता से जुड़ल बा आ कथा-साहित्य के एगो विराट् प्रगतिशील परम्परा के उजागर करत बा । श्री रजनीकांत 'राकेश' जइसन कुछ अति उत्साही वामपंथी प्रतिबद्धता के प्रचार साहित्य तक भी ले जाये में ना हिचकलन ।

अइसे त भोजपुरी मूलत: आम आदमी के भाषा रहल बा, जवना का कारण एकरा साहित्य -विशेष रूप में कविता, कहानी आ नाटक- में वर्गीय प्रतिबद्धता उभरल बा । भोजपुरी समाज आ क्षेत्र देश के एगो पिछड़ल क्षेत्र ह, एह से परिवेशगत, परिस्थितिगत वर्गीय प्रतिबद्धता के वर्चस्व एकरा साहित्य पर प्रत्यक्ष आ परोक्ष रूप से आइल स्वाभाविक बा । कुछ अपवादन के छोड़ के सम्पूर्ण भोजपुरी साहित्य आम आदमी, ओकरा सुख-दुख, आशा-निराशा, उत्पीड़न-शोषण आ अत्याचारन के स्थितियन के लिखित दस्तावेज बा । एह तरह, भोजपुरी कथा-साहित्य मूलत: वर्गीय प्रतिबद्धता में आबद्ध बा ।

आज एही क्रम में सूर्यदेव पाठक 'पराग' के 11 (ग्यारह) कहानियन-- 1. प्रश्न-चिन्ह, 2. टूटत रिश्ता, 3. हादसा, 4. देश खातिर, 5. विधवा, 6. जवान साधु, 7. रात बरसात के, 8. भिखारिन के राजकुमार, 9. सोना के परख, 10. तिकोन आ, 11. संकल्प हमारा सोझा बा, जवन भोजपुरी के प्रतिनिधि कथा-पत्रिका **'भोजपुरी कथा-कहानी'** में प्रकाशित भइला का साथे-साथ **'प्रश्नचिन्ह'** नाँव से स्वतन्त्र कहानी-संग्रह का रूप में प्रकाशित होई। भोजपुरी साहित्य के समृद्ध करे खातिर श्री 'पराग' जी बधाई के पात्र बानी।

श्री सूर्यदेव पाठक 'पराग' जी जन्म से भोजपुरी जइसन पिछड़ल क्षेत्र के निम्न मध्यमवर्गीय परिवार से संबंध राखत बाड़न । बड़ा आर्थिक तनाव का बीच अपना निष्ठा, लगन आ परिश्रम से ऊ उच्च शिक्षा पवलन आ कई बेर नौकरी के स्थान बदलियों के उच्च विद्यालय में शिक्षक बाड़न । अपना वर्ग-जन्म, पढ़ाई आ नौकरी का दौरान आ सामाजिक मेलजोल में श्री 'पराग' जी गाँव का आम आदमी का सुख-दु:ख, उत्पीड़न-अत्याचार, गरीबी आ बेरोजगारी आ अइसन नाना प्रकार के चीजन के स्वयं भी भुक्तभोगी भइलन आ अइसन स्थितियन के अनुभवों अर्जित कइलन । एह सभ के जवन प्रभाव प्रत्यक्ष आ परोक्ष रूप से उनका मानस पर पड़ल कि आम आदमी का प्रति 'पराग' जी के पक्षधरता स्वाभाविक हो गइल । अपना विद्वत्ता आ कुशलता का आधार पर श्री 'पराग' जी अपना पारम्परिक जाति-व्यवस्था आ शिक्षक का उच्च गरिमा का सहारे छिपावे में बहुत दूर तक सफल भइलन, बाकिर एह कहानियन आ अपना लघुकथन में ऊ अपना के बँचा ना सकलन।

एह ग्यारहो कहानी के कथावस्तु समाज के आम आदमी के अन्त:बाह्य संघर्षन के तस्वीर बा । 'प्रश्न-चिन्ह' में घूसखोरी, 'टूटत रिश्ता' में संयुक्त परिवार के विघटन, 'हादसा' में युवा वर्ग के बेकारी, 'देश खातिर' में देशभक्त के कुर्बानी, 'विधवा' में नारी-समस्या, 'जवान साधू' में पारिवारिक समन्वय के अभाव, 'बरसात के रात' में गरीबी के विडम्बना,

www.bhojpurisahityangan.com

'भिखारिन के राजकुमार' में भूख के समस्या आ संतान के महत्त्व, 'सोना के परख' में समाज में व्याप्त दहेज के कुप्रथा, 'तिकोन' में पारिवारिक खींचा-तानी आ 'संकल्प' में आज का राजनीति में फइलल मूल्यहीनता आ भ्रष्टाचार उजागर भइल बा । यह सभ कहानियन के घटना-स्थल गाँव बा आ परिवेश ग्रामीण बा। घटना-क्रम के विकासो गाँव में भइल बा। ई सब कथा-आयाम कथाकार के आम आदमी का प्रति वर्गीय प्रतिबद्धता के पुष्टि करत बा ।

एह ग्यारहो कहानी के पात्र आम आदमी बाड़न । चरित्र-निर्माण आ पारस्परिक संबंध आ संघर्षन के जवन विकास एह कहानियन में मिलता, ऊ कहानीकार के प्रतिबद्धता के द्योतक बा । 'प्रश्न-चिन्ह' के जगत मास्टर, 'टूटत रिश्ता' के मनोहर, 'हादसा' के नीरज, 'देश खतिर' के नवविवाहित युवा सैनिक रतन, 'विधवा' के राधा, जवान साधू' के आत्महत्या खातिर उतारू नारी, 'रात बरसात के' के पारवती, 'भिखारिन के राजकुमार' के भूख-पियास से तड़पत नारी आ बालक, 'सोना के परख' के सोना, 'तिकोन' के मनमोहन आ चम्पा, आउर 'संकल्प' के जग्गू आ धीरू-- सभे गाँव के आम आदमी बा आ सभे अपना-अपना समस्या से जूझ रहल बा । कथाकार के एह सभ पात्रन का प्रति सहानुभूति बा, जवन उनका मनोवृत्ति के रूझान के प्रतीक बा ।

सभ कहानियन के संवाद भा पत्राचार स्वाभाविक लागत बा । तेवर, लहजा आ शब्द-योजना से भोजपुरी समाज के अनायास परिचय होत बा, जइसे गाँव में होखी ।

अइसे त शिल्प विषय का साथे संपृक्त रहेला, बाकिर 'पराग' जी सुधि पाठक आ साहित्यकार हवन । ऊ एह कहानियन में कई प्रकार के शिल्प संरचना अपनवले बाड़न, जवन सराहनीय बा ।

'पराग' जी के एह कहानियन के भाषा सरल, सहज आ बोधगम्य बा । आवश्यकतानुसार मुहावरन के बढ़िया प्रयोग बा, बाकिर भाषा के आभिजात्य अलंकरन कहीं नइखे ।

सब मिला के श्री सूर्यदेव पाठक 'पराग' प्रगतिशील चेतना के प्रतिबद्ध कथाकार लागत बाड़न । हम उनका अभिरूचि के एह दिशा आ प्रयास के प्रति आस्थावान बानीं ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

जिनिगी से सीधा सरोकार के कहानी

❑ कृष्णानन्द कृष्ण

भोजपुरी कहानी के विकास यात्रा के देखल जाव त पता चलेला कि पचासे बरिस में एकर विकास अतना तीव्र गति से भइल बा कि आश्चर्य होला। भोजपुरी कथा लेखन में कवनो तरह के प्रायोज़ित आन्दोलन त ना खड़ा भइल बाकिर हिन्दी कहानी आन्दोलन के प्रभाव भोजपुरी लेखन प पड़ल बा एह से इनकार नइखे कइल जा सकत। भोजपुरी कहानी के शुरूआते यथार्थवादी आदर्श का आँचर का तरे होत बा। ई एगो शुभ लक्षण रहे। एहसे भोजपुरी कथा लेखन भटकाव के शिकार ना भइल। भोजपुरी में जे कथा लेखन शुरू भइल ऊ आगे चलके साफ-साफ दू धारा में बटाइल । एगो धारा में सामाजिक-पारिवारिक संबन्धन के लेके अतीतजीवी रोमानी कहानियन के सृजन भइल त दोसरा धारा में सामाजिक राजनैतिक विचार धारा से लैश प्रगतिशील कहानियन के सृजन भइल जवना में जिनिगी के तल्ख सच्चाइयन से रू-ब-रू होखे के क्षमता रहे। जवना में जीवन के समसामयिक विसंगतियन के कथा-वस्तु बनावल गइल आ ओकरा विरोध में एगो माहौल खड़ा कके एगो साफ-सुथरा जीवन के कल्पना कइल गइल। बेकारी, घुसखोरी, भ्रष्टाचार, सामाजिक वैषम्य, मूल्यहीनता, राजनैतिक चरित्र हीनता, पारिवारिक विघटन, आतंकवाद, धर्मान्धता, नारी उत्पीड़न आ शोषण अइसन विपरीत परिस्थितियन के बीच संघर्ष करत भोजपुरी कहानी आपन राह तय कइलस । एह से अधिकांश भोजपुरी कहानी सब जिनिगी के तल्ख सच्चाई के जीवंत दस्तावेज बन गइली स ।

सूर्यदेव पाठक 'पराग' के कहानियन के बीच से गुजरला प अनुभव होला कि आदमी अपना अँतरा-पँतरा में पसरल, छितराइल जीवन के छोट-छोट विसंगतियन के बीच घुम रहल बा। जवना में ओकरा जिनिगी के हर्ष-विषाद, ऊँच-नीच, व्यवस्था-कुव्यवस्था, संस्कृति-अपसंस्कृति के देखल-परखल छनन के तस्वीर एगो कुशल कैमरा मैन अइसन उरेहे के सफल कोशिश कइल गइल बा। मध्यवर्गीय परिवार से आवेवाला 'पराग' के कहानियन के मूल-चेतना के आधार मध्यवर्गीय समाज बा। जहँवा आर्थिक दबाव में जीयत-मरत लोग बा, ओकर दाँव-पेंच बा, धार्मिक अंधविश्वास बा, ओकर आपन रूढ़ि बा। ई शायद लेखक के मजबूरी बा। एह संकलन के कहानियन के भीतरे-भीतरे एगो अइसन तार जुड़ल बा जवन कहानियन के पात्रन के मनोबल टूटे नइखे देत। बलु कहीं ना कहीं से ओकरा के अत्याचार-अनाचार आ सामंती व्यवहार के खिलाफ खड़ा होखे के ताकत देता। ई सोच पूरा प्रखरता के साथ पराग के कहानियन में भलहीं उजागर मत भइल होखे बाकिर एकर बीज हर कहानी में मौजूद बा जवन आदर्श के रूप में पाठकन के सामने आबत बा ।

एह संकलन के कहानियन में जिनिगी के कई गो धूप-छाँही रंग उभर के सामने आइल बा। ग्यारह संकलित कहानियन में 'प्रश्नचिन्ह' 'टूटत रिश्ता', 'हादसा', 'देश

www.bhojpurisahityangan.com

खातिर', 'विधवा', 'जवान साधु', 'रात बरसात के', 'भिखारिन के राजकुमार', 'सोना के परख', 'तिकोन' आ 'संकल्प' बड़ुए । एह संकलन के कहानियन के पढ़ला से साफ पता चलत बा कि कहानी सब बिना कवनो ताम-झाम के सहज-सपाट ढंग से आपन राह तय करत जिनिगी के यथार्थ के परिणति आदर्श में करत बाड़ी स। यथार्थ पर आदर्श के स्थापना एह कहानी संग्रह के मूल उद्देश्य बड़ुए । आज के उच्छृंखल, आचारहीन, संवेदनहीन समाज में जहँवा जीवन के सब आदर्शन के बखिया उघारल जात होखे, ओइसनका में आदर्श के स्थापना के कोशिश पाठक मन के ओइसन शीतलता प्रदान कर जाता जइसन शीतलता प्रचंड गरमी का बाद के बरखा देला। एह दृष्टि से एह संग्रह के कहानी सब पाठक के मन के बाँधे में सफल बाड़ी स ।

संग्रह के पहिला कहानी **'प्रश्नचिन्ह'** बा। एह कहानी के मूलकथावस्तु कार्यालय में व्याप्त भ्रष्टाचार बा। एगो कार्यालय में काम करेवाला एगो छोट कर्ल्क के भ्रष्टाचार के कमाई से चमकत-दमकत जीवन शैली बा त दोसरा ओर एगो चरित्रवान शिक्षके के अभावन से संघर्ष करत आ आदर्शन के रक्षा करत जीवन शैली बा । जवन आर्थिक विषमता के दबाव में डगमगाये लगात बा बाकिर कहानीकार आदर्श के रक्षा करे में सफल हो जात बा। नाटकीय ढंग से एसपी के आगमन मास्टर जगत के डगमगात पैर के एगो मजबूत आधार देता आ मास्टर के अपना प गर्व होत बा ।

आज जब स्कूली शिक्षा में परिवार के परिभाषा बदल गइल बा। एह में संयुक्त परिवार के कवनो स्थान नइखे। एकर फलाफल ई भइल कि एके परिवार के आदमी एक दोसरा के अहमियत ना देके अपना स्वार्थ का खोल में लिपटल रहेला। ओकरा खाली अपना 'स्व' के चिंता अधिक रहेला। **'टूटत रिश्ता'** कहानी एही संयुक्त परिवार के विघटन के व्यथा बड़ुए । ओहिजे **'हादसा'** में एगो पढ़ल-लिखल बेरोजगार के माध्यम से आज के समाज में फैलल भ्रष्टाचार के उजागर कइल गइल बा ।

आज चारो ओर नारी स्वतंत्रता आ ओकरा हक के अवाज बुलंद कइल जाता। ओकरा अस्मिता के रक्षा करे खातिर आंदोलन कइल जात बा बाकिर सही आ सांच बात ई बा कि पुरुष वर्ग के खेयाल आ सोंच अबहियो नारी जाति के गुलाम बना के राखे के बा । ओकर विरोध आ ओकर शोषण हर स्तर पर कइल जा रहल बा । एह संग्रह के तीन गो कहानी **'विधवा', 'जवान साधु' आ 'सोना के परख'** में नारी जीवन के त्रासदी के तीन कोण से उठावल गइल बा। लेखक बड़ा होशियारी से कहानियन के अंत करत आदर्श के स्थापना कइले बा। पात्रन के चरित्र के गिरे नइखे देले। **'सोना के परख'** कहानी के माध्यम से इहो संदेश देले बा कि अब स्त्री अइसन अबला नइखे रह गइल कि गाय अइसन केहू के खूँटा प बन्हाय । अब ऊ विरोध करे के हिम्मत राखतिया कि जवना घर में दहेज लेल जाई ओहिजा ऊ बिआह ना करी । ई दृढ़ निश्चय भहिला लोग के ताकत के अहसास करा जात बा ।

'रात बरसात के' आ **'भिखारिन के राजकुमार'** में साधन विहीन गरीब अलचार मध्यमवर्गीय परिवार आ गरीब भिखारिन आ ओकर बेटा के आर्थिक विफलता के पाट का

www.bhojpurisahityangan.com

बीचे पीसत ओकर त्रासद स्थितियन के चित्र उरेहे के कोशिश कइल गइल बा। **'रात-बरसात के'** में ई व्यंग उभर के सामने आइल बा कि आजादी के पचास बरिस बादो लोगन के सिर पर एगो आपन छत ले नइखे जवना के नीचे ऊ चैन से सूत सको। ओहीजे **'भिखारिन के राजकुमार'** में एगो पुत्रविहीन नारी के पुत्र पावे के तड़प के उजागर कइल गइल बा।

'पराग' के कहानी **'तिकोन'**, जइसन कि मथेला से जाहिर होता जीवन, के अझुरहठ के त्रिकोण के बीचे फँसल एगो मध्यमवर्गीय परिवार के अपना संस्कारन में जकड़ल स्थितियन के कहानी बा। तीन गो पत्रन के माध्यम से कथाकर तीन गो स्थिति के चित्र उरेहले बा। जवना में पुत्र के प्रति पिता के आशा-उमेद बा, दोसरा ओर नवोढ़ा पत्नी के दिल के बेचैनी बा त तीसरा ओर ओह दूनो के बीच में संघर्ष करत नायक के मानसिक अंतर्द्व के चित्रण कइल गइल बा।

संग्रह के आखिरी कहानी **'संकल्प'** में आज के समाज में फैलल कुव्यवस्था, कार्यालयन में गेडुआ मार के बइठल भ्रष्टाचार आ ओकरा कार्य शैली से प्रभावित जीवन के चित्र उकेरल गइल बा। एह कुव्यवस्था में साँस लेत आदमी एतना उबिया गइल बा कि अब ऊ एह भ्रष्टाचारियन से आमने-सामने खड़ा होके फैसला कइल चाहत बा। ओकरा ई समझ में आ गइल बा कि एह भ्रष्टाचार में खाली अफसर, इंजीनियर आ ठेकेदारे दोषी नइखे बलुक सबसे जादे दोषी बा ऊ अदृश्य हाथ जेकरा छत्रछाँह में ई सब कुकर्म फल-फूल रहल बा। तबे नू जग्गू अइसन नवजवान ई संकल्प लेत बा कि अब कवनो आफिस में काम खातिर घूस ना दिआई आ एकरा के रोके खातिर आंदोलन चलावल जाई। ई संकल्प आम आदमी के जागरूकता के संकेत दे रहल बा जवन शुभ बा।

एह तरह ई कहल जा सकेला कि 'पराग' के कहानी आज के भोजपुरिया समाज के, सहज सरल भाषा में प्रस्तुत कहानी बा, जवना में ओकरा भीतरी के ढाँव-पेंच, ओकर चरित्र, ओकर सहजता ऊ सभ उजागर भइल जवन पाठक के अपना अगल-बगल में पसरल बा। इहे कारण बा कि पाठक एह कहानियन के साथ तादात्यम्य स्थापित क लेता। इहे एह कहानी संग्रह के सफलता बडुए। ई पराग जी के पहिलका कहानी संग्रह ह। अगिला कहानी संग्रह आवत-आवत इनका शिल्प में प्रौढ़ता आई आ अभिव्यक्ति अउर सशक्त बनी अइसन उमेद बा।

●

www.bhojpurisahityangan.com

सामाजिक बेवस्था पर 'प्रश्न-चिन्ह'

❑ भगवती प्रसाद द्विवेदी

पिछला पचास बरिस में समय-संदर्भ के मद्देनजर भोजपुरी कहानी के उत्तरोत्तर विकास भइल बा आ आज समकालीन भोजपुरी कहानी भाषा, भाव, शिल्प का स्तर पर अपना दमदार मौजूदगी के एहसास करावत अउर भाषा के कहानियन से टक्कर ले रहल बाड़ी स। एने छपल भोजपुरी पत्रिकन के कहानी विशेषांक आ कथाकारन के एकल संग्रह एह बात के सबूत बा। बन्धुवर सूर्यदेव पाठक 'पराग' के टटका कहानी-संग्रह **'प्रश्न-चिन्ह'** एही सिलसिला के एगो कड़ी बा ।

साहित्य में कथाकार 'पराग' के बहुआयामी प्रतिभा के दर्शन भइल बा। कहानी का अलावा नाटक, कविता, उपन्यास, लघुकथा आ साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में इहां के महारत हासिल बा। एह से ई तय कइल मुश्किल बा कि इहां के लेखन के मूल विधा का ह। बाकिर एगो बात जरूर बा कि 'परागजी' क हर विधा में कहीं-ना-कहीं कवनो-ना-कवनो रूप में व्यंग्य के पुट जरूर भेंटाई । एह कहानियनों में इहां के समाज में फइलल विसंगतियन पर जमिके चोट कइले बानी। एह से ई बेझिझक कहल जा सकेला जे व्यंग्य इहां के रचनाधर्मिता के स्थायी भाव ह ।

'प्रश्न-चिन्ह' के कहानी समाजिक बेवस्था पर प्रश्न-चिन्ह लगावत बाड़ी स। का वजह बा कि सच्चाई, ईमानदारी, प्रतिभासम्पन्नता आ सेवाभाव के आज कवनो मोल नइखे आ घूसखोर, बेईमान, तिकड़मबाज चानी काटत बाड़न । (प्रश्न चिन्ह) तबे नू प्रतिभावान युवा दर-दर के ठोकर खात **'हादसा'** के शिकार होत बाड़न आ जेकरा सचहूँ बेकार रहे के चाहीं ऊ सोर्स-पैरवी आ दौलत के बदौलत पद पर काबिज हो जात बा। एकरा खातिर पढ़ाइए के दौरान कमे उमिर में शादी-बियाह आ **'तिकोन'** का जाल में अझुरावे वाला बापो-महतारी कम जिम्मेवार नइखन। आजुओ बेबसी के चक्की में पिसात नारी, ऊहो **'विधवा'**, के संघर्षशीलता के कवनो ओर-छोर नइखे आ अर्थ केन्द्रित स्वार्थांध समाज में संयुक्त परिवार के बिखराव आ **'टूटत रिश्ता'** चिन्ता के विषय बा। आज जबकि भ्रष्टाचार शिष्टाचार के रूप ले लेले बा, जबले आम आदमी धर्म-सम्प्रदाय आ जाति-बिरादरी के मकड़जाल से उबरिके विद्रोही बिगुल बजावे के 'संकल्प' ना ली, तबले का वाकई कवनो इंकलाबी बदलाव आ सकेला ?

'प्रश्न-चिन्ह' के कहानियन में जिनिगी के धड़कन मौजूद बा। कथाकार 'पराग' के व्यक्तित्वे जइसन ई कहानी सहज बाड़ी स आ पानी नियर प्रवाह इन्हनी के खासियत बा। बिना कवनो तामझाम आ लाग-लपेट के सोझ-साँच बात बोधगम्यता का संगे अभिव्यक्त कइल कथाकार के मंशा रहल बा आ कहानियन का माध्यम से पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक अउर सांस्कृतिक विसंगतियतन विद्रूपता के खुलासा करत संवेदित-स्पंदित करे में बखूबी कामयाबी मिलल बा। कथाकर कवनो राजनीति 'वाद' से

www.bhojpurisahityangan.com

ना, बलुक मनुष्यता का प्रति प्रतिबद्ध बा आ समाज में फइलल, सुरसा-अस मुंह बवले दहेज, युद्ध के विभीषिका, गरीबी,बेबसी, भूख अउर अनाचार-अत्याचार के ऊ खाली चित्रित करे में ना, जर-मूल से खात्मा करे के पक्षधर बा। कहीं आपबीती बा त कहीं जगबीती। अपना भोगल यथार्थ का संगे-संगे समाज में देखल-महसूसल विश्वसनीय यथार्थ एह कहानियन के कथानक बनल बा, जवना में निचिला आ बिचला तबका के दर्द, घुटन, संत्रास आ पीड़ा के बानी दिहले गइल बा ।

बाकिर अपना कहानियंन के जरिये वर्तमान के दर्दनाक, मर्मस्पशी अउर लांगट चित्र उकेरले कथाकर के लक्ष्य नइखे। ऊ त यथार्थ में आदर्श स्थापित कइल चाहत बा आ समाज के सही राह देखावे का गरज से आदर्शोन्मुख यथार्थ के सिरजन कइले बा। अब ई बात गौरतलब बा कि रचेवाला खाली विश्वसनीय यथार्थ के सोझा राखो आ कि पाठक के आँख में अंगुरी डालिके आदर्श के राहो बतावो ।

यथार्थ आ आदर्श का दिसाई बहुत कुछ लिखाइल बा आ आजुओ ई बहस-मुबाहिसा के मुद्दा हो सकेला, बाकिर ई बात निर्विवाद बा कि संग्रह के कई गो कहानी पाटक के संघर्षशीलता, जीवटता अउर अदम्य जिजीविषा से भरि देत बाड़ी स आ हाड़ल-थाकल टूटल लोगन के फेरू से नया सिरा से जीए खातिर प्रेरित करत बाड़ी स। **'प्रश्न-चिन्ह'** के हताश-उपेक्षित अध्यापक के जब एगो सफल छात्र यथोचित सम्मान देत उन्हुकरा महानता के बखान करत बा त ऊ जीवंतता से लबालब भरि जात बाड़न । एही तरी **'संकल्प'** में भ्रष्टाचार से धर्म-मजहब जाति से ऊपर उठिके लड़े-भिड़े के संकल्प प्रेरना से भरि देत बा। एगो **'विधवा'** के संघर्षशीलता आ समाज से लड़े के कूबत शोषित-उत्पीड़ित नारी के उकसावे में आपन सानी नइखे राखत ।

कुल्हि मिला के, ई निस्संकोच कहल जा सकेला कि **'प्रश्न-चिन्ह'** के कहानियन में आम आदमी के सोच आ समझ के तीख-तेवरगर ढंग से अभिव्यक्ति मिलल बा अउर मानवीय मूल्यन के पुनर्स्थापना के दिसाई कथाकार के बेचैनी स्पष्ट झलकत बा। उमेद बा, अगिला संग्रह में अउर गहिराई में जाके गझिन संवेदना का संगे कथाकार ओह मूल-भूत कारनन के पड़ताल करी, जवन आज के घिनावन सामाजिक बेवस्था आ बलीज हालत खातिर उत्तरदायी बाड़न स। विसवास बा, कथाकार के बेगर नून-मरिचा मिलवेले सहज ढंग से कहानी कहे के अन्दाजेबयानी आ हरेक सामाजिक असंगति-विसंगति पर से परदा हटा के सवालिया निशान लगावत सही डगर देखावे के साफगोई के मनगर स्वागत होई । हमार हार्दिक बधाई !

●

www.bhojpurisahityangan.com

मानवीय संवेदना के कहानी

❑ जीतेन्द्र वर्मा

भोजपुरी जगत में सूर्यदेव पाठक 'पराग' के नाम जानल-पहचानल बा. 'प्रश्न चिन्ह' इहाँ के पहिला कहनी संग्रह हवे। एकरा पहिले इहाँ के कई गो मौलिक आ संपादित पुस्तक हिंदी, भोजपुरी में प्रकाशित हो चुकल बा.

पराग जी मानवीय संवेदना के कहानीकार बानी। आदर्श के प्रति इहाँ के आस्था अटूट बावे। इहाँ के विश्वास टकराव में नइखे। इहाँ ई बात अखियान करे लायक बा कि पराग के 'जन्म एकदम कम आमदनी वाला सामान्य मध्यवर्गीय परिवार में भइला से बचपन से आर्थिक कठिनाई से जुझे के आदत लाग गइल। अभाव जिनगी के ओढ़ना-बिछौना बन गइल। बाबू जी हमरा आ आउर भाई लोग का पढ़ाई खातिर कसहूँ रुपया जुटा के भेजी। ओह घड़ी सेठ-साहूकारन से पाला पड़त रहला से हमरो ओह परिस्थितियन से रू-ब-रू होखे के मौका मिलत रहल।' **(हमार रचना प्रक्रिया)**

एतना भइला का बादो लेखक का मन में व्यवस्था के प्रति जवन आक्रोश बा ऊ संघर्ष के सीमा तक नइखे पहुँचत. कहानीकार व्यवस्था में शांतिपूर्ण ढंग से बदलाव के पक्षधर बा। एह संग्रह के अधिकांश कहानी लेखक के जीयल आ भोगल बा।

एह संग्रह के **'प्रश्न चिन्ह', देश खातिर', 'विधवा,' 'जवान साधु', 'सोना के परख,' 'संकल्प'** शीर्षक कहानी आदर्शवादी बाड़ी सन। एह कहानियन में सामाजिक, सांस्कृतिक नवनिर्माण के उत्कट चाह बा। **'जवान साधु'** आ **'सोना के परख'** जइसन कहानियन में आदर्शवाद अपना पराकाष्ठा पर पहुँच गइल बा। पराग के आदर्शवादी कहानी प्रेरणा दे ताड़ी सन-एह में कवनो संदेह नइखे।

'प्रश्नचिन्ह' में शिक्षक आ कलर्क के बीच उभरल द्वन्द ईमानदारी आ बेइमानी के बीच होखे वाला द्वन्द बा। ई ठीक बा कि एह समय चारो तरफ मूल्यन के ह्रास हो रहल बा। बाकिर अंतिम विजय सत्य के होई, कहानीकार के एह में पूरा विश्वास बा।

आदर्शवादी भइला का बादो पराग के कहानियन में अप्रासंगिक हो चुकल रीति-रिवाज आ परम्परा के प्रति आग्रह नइखे, बल्कि कई जगे एकरा खिलाफ स्वर उठल बा, भले ऊ स्वर धीमा बा, बाकिर बा जरूर। **'सोना के परख'** दहेज के आग में धनकत घर-परिवार के कर कह रहल बा। एह कहानी के नायिका 'सोना' आपन शादी अइसन परिवार में करे के निर्णय लेत बाड़ी जवन बिना तिलक-दहेज के शादी करी। जवना समाज में नारी के बचपन में पिता के, जवानी में पति के आ बुढ़ापा में प्रतिभा के अधीन राखे के धार्मिक विधान होखे ओजवाँ नारी के शादी के बारे में निर्णय करे के स्वतंत्रता एगो बड़हन बदलाव के कथा कह रहल बा।

एही कहानी में 'बेटी बेचवा प्रथा' के उल्लेख आइल बा। **'बेटी बेचल'** समाज में शर्मनाक मानल जाला बाकिर बेटा जेतने बेसी दाम में बेचाला ओतने इज्जतो बढ़ेला। ई पुरूष प्रधान समाज के दोहरा मनोवृत्ति के परिचायक बा।

पराग के आदर्शवादी कहानी आधुनिक कहानी कला के दृष्टि से भले

www.bhojpurisahityangan.com

पीछे होखे, बाकिर ओह में मानवतावादी स्वर प्रमुखता से अभिव्यक्त भइल बा। अइसन छोट-छोट प्रसंग कहानियन में आइल बाड़ी सन जवन भीतर ल झकझोर दे ताड़ी सन।

'हादसा', 'रात बरसात के,' 'तिकोन,' 'टूटत रिश्ता,' 'भिखारी के राजकुमार' शीर्षक कहानी मर्मस्पर्शी बन पड़ल बाड़ी सन। एह कहानियन में आदर्शवादी स्वर धीमा भइल बा।

'तिकोन' पराग के सबसे सफल कहानी बन पड़ल बिया. तीन गो चिट्ठी में कहानी पूरा हो गइल बा। पढ़ते समय भइल विवाह-जइसन अक्सर गाँव में होला - कइसे युवक के ध्यान पढ़ाई से हटा देला ओह सब परिस्थिति के चित्र एह में सजीव ढंग से उभरल बा।

ग्रामीण मध्यवर्गीय परिवार के शादी के बाद पिता के पुत्र के प्रति, ससुर के पतोह के प्रति, पत्नी के पति के प्रति, पुत्र के माता-पिता के प्रति, पति के पत्नी के प्रति-जवन मनोभावना उमड़ेला ओकर मनोवैज्ञानिक रूप एह कहानी में उरेहाइल बा। ग्रामीण परिवेश के अइसन प्रसंग के चित्रण हिंदी में भी कमे मिलेला।

पहिले के 'परिवार' अब 'संयुक्त परिवार' हो गइल बा। चार-पाँच पीढ़ी पहिले परिवार के जवन स्वरूप रहे आज के पीढ़ी खातिर ऊ कल्पनातीत हो चुकल बात्र आज परिवार के अर्थ पति-पत्नी आ संतान तक ही बा। संतानो तबे ले जबले ओकरा परख नइखे जामत। आधुनिक युग में अइसन बहुते अच्छा-बुरा परिस्थिति बनल जवना का करते संयुक्त परिवार बिखरत गइल। **'टूटत रिश्ता'** आर्थिक दबाव में खट्टा होत भाई-भाई के संबंध के सामने रख रहल बिया। ''परिवार के मकान के ईटो जोड़े वाला सीमेन्ट अब रुपये बन गइल बा। तबे त केहू-केहू के मूल्यांकन ओकरा रुपये देहला से कर रहल बा।'' (टूटत रिश्ता) समकालीन मध्यवर्गीय परिवार के विघटन के कारण एह में चित्रित भइल बा।

पराग जी मूलत: कवि हईं। कहानियन में कहीं-कहीं इहाँ के कवि हावी हो गइल बा ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

हमार रचना-प्रक्रिया

❑ सूर्यदेव पाठक 'पराग'

हम जब अपना रचना-प्रक्रिया पर विचार करे जा रहल बानी त सबसे पहिले हमार नजर अपना समूचा रचनन के सृजन-प्रक्रिया पर दउड़े लागत बा आ हमरा सामने एके साथे हमार हर विधा के रचना आ के ठाढ़ हो जात बाड़ी स, जइसे बोलाहट के आहट पावते पिता का सामने कुल्ह सन्तान आके एक पाँत में ठाढ़ हो जाए ।

जइसन कि देखे-सुने में आवेला, ज्यादातर साहित्यकार पहिले कविता लिखे से आपन साहित्यिक जिनगी आरंभ करेले आ फेर गते-गते अपना क्षमता आ रुझान का मोताबिक केनियों एक तरफ तेजी से बढ़ जाले, चाहे कई विधन में सफलता पाके आपन सृजन-कर्म जारी रखेले । हमरो रचनाकार पहिले पहिल गद्य का अपेक्षा पद्ये से प्रभावित भइल आ गुनगुनात तुकबंदी करत अपना बचपन के शुरुआत कइलस, बाकिर सबसे पहिले हमार एगो निबन्ध **'ऋतुराज वसंत का स्वागत'** सीवान (बिहार) से निकलेवाली एगो साप्ताहिक पत्रिका **'नवमार्ग'** में 1962 में छपल। एह तरह से छपे के शुरुआत गद्ये से भइल । बाद में 1964 में पटना से प्रकाशित होखेवाला प्रसिद्ध दैनिक आर्यावर्त के 'दीपावली परिशिष्टांक' में एगो कविता **'घर-घर दीप जले'** छपल। तबसे अबले भोजपुरी आ हिन्दी में पद्य आ गद्य के गंगा-जमुनी धारा साथे-साथे बहत रहल आ हमरा रचनाधर्मिता का विकास के साथे पद्य जहाँ कविता, गीत, गजल, मुक्तक आ हाइकु का रूप में विस्तार पवलस ओहीजा गद्यो निबन्ध, नाटक, समीक्षा, उपन्यास, लघुकथा, कहानी आदि का रूप में विस्तार पावत गइल ।

हमरा पुस्तकन का प्रकाशन-क्रम में भलहीं सबसे पहिले भोजपुरी के हास्य-व्यंग्य काव्य' **श्रीहीरोचरितमानस**' प्रकाशित भइल बाकिर एकरा बाद अभी ले दुगो मौलिक पुस्तक **'अछूत'** (उपन्यास) आ **'जंजीर'** (नाटक) का साथे **'तिरमिरी'** (लघुकथा संकलन) के सम्पादन हमार गद्य का ओर रुझान के सबूत रहल बा । 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' एह कथन का रूप में संस्कृत के विद्वान लोग गद्ये के कवियन का रचना के कसौटी मनले बा जवन हमरो नजर में सटीक आ सार्थक बा । गीतन के लिखे भा गावे-गुनगुनाये में आत्मिक सुख जरूर मिलल बाकिर गद्ये लिखला पर हमरा मानसिक

www.bhojpurisahityangan.com

संतोष मिलल ।

जहाँ तक कहानियन का रचना-प्रक्रिया के सवाल बा, कहानीकार के वैचारिक चिन्तन आ ओकरा भाषा, शैली, शिल्प आदि का बारे में विचार कइल जरूरी होला । कवनो विचार परम्परा आ परिवेश के उपज होला । सामंती खानदान में जनमल आदमी में सामंती विचारधारा ओकरा भीतर खून नियर दउड़त रहेला, बाकिर आसपास के वातावरनो कबो-कबो ओकरा के परम्परा से हट के सोचे के मजबूर करेला । अइसनो पावल जाला जे रचनाकार का अध्ययन के जरिये मिलल चिन्तन ओकरा विचारधारा के बदले में सहायक होला, ओकरा में एगो नया चेतना के जनम देला जवन लोकहित खातिर परम्परा के बेड़ी काटे आ सही बात कहे के बाध्य करेला।

हमार जनम एकदम कम आमदनी वाला सामान्य मध्यवर्गीय परिवार में भइला से बचपने से आर्थिक कठिनाई से जुझे के आदत लाग गइल । अभाव जिनगी के ओढ़ना-बिछौना बन गइल । एह हालत में बाबूजी हमरा आ आउर भाईलोग का पढ़ाई खातिर कसहूँ रुपया जुटा के भेजीं। ओह घड़ी सेठ-साहूकारन से पाला पड़त रहला से हमरो ओह परिस्थितियन से रू-ब-रू होखे के मौका मिलत रहल । एह आधार पर हम बिना संकोच के मानत बानी कि गरीबी, अभाव, बेरोजगारी, पारिवारिक तनाव, शिक्षण संस्थान में अव्यवस्था, कार्यालयन में घुसखोरी आ राजनीति में आइल गिरावट समय का साथे हमरा अनुभव में बढ़ोत्तरी करत गइल जवन हमरा कहानियन में कथानक के रूप लिहलस।

एह कहानियन में कुछ त अपने जिनगी के भोगल यथार्थ बा त कुछ आसपास के देखल परखल लोगन का जिनगी के सचाई बा, बाकिर कहीं-कहीं यथार्थ के चीरि के झाँकत आदर्शो कहानी में आके समाज के एगो नया मोड़ देबे के कोसिस कइले बा । हमरा समझ से रचनाकार के काम समाज के हू-ब-हू तस्वीर उरेह दिहल ना ह बलुक ओके एगो सही दिशा का ओर मोड़लो ह । एहसे हमरा कहानियन में यथार्थ का साथे आदर्शों के पुट देखल जा सकेला ।

रचना-प्रक्रिया का चर्चा के प्रसंग में हम अपना कहानियन के कथानको का बारे कुछ बतावल जरूरी समझत बानी ।

'प्रश्न-चिह्न कहानी में आफिस में क्लर्की कके दू नम्बर का आमदनी से पुरहर 'बैंक बैलेंस' आ देखनउक मकान बनाके शेखी बघारे वाला का आगे जगत मास्टर का भीतर उठेवाला सवाल आ फेर रामनिवास एस. पी. के शिष्य का रूप में उपस्थित करा के यथार्थ पर आदर्श के प्रतिष्ठित करेके प्रयास भइल बा । जाहिर बा कि एगो शिक्षक का रूप में खुद जीयेवाला कहानीकार के ई सोच ओकर खुद के भोगल सचाई बा, जवन एह कहानी में प्रगट भइल बा ।

'टूटत रिश्ता' में संयुक्त परिवार के एक सदस्य के दोसरा सदस्यन का भावना आ परिस्थिति के महत्व ना दिहला से होखेवाला पारिवारिक विघटन के चित्र बहुत कुछ अपने भोगल यथार्थ के कलात्मक अभिव्यक्ति बा, जवन अवचेतन से कहानी का

www.bhojpurisahityangan.com

माध्यम से आम आदमी तक पहुँचे में सफल भइल बा ।

हमरा अगल-बगल में बढ़ रहल युवावर्ग के बेकारी आ नोकरी के नाँव पर पैरवी आ पैसा के लंगटा नाच देखके जागल मानवीय संवेदना के परिणति ह **'हादसा'** । आज बेकारी का अन्हरिया में भटकेवाला नीरज जइसन नौजवान डेगे-डेगे पावल जा सकेले। एह बेकारी का भटकाव में हमरो जिनगी का सचाई के झलक शामिल बा । ई स्थिति ज्यादा दिन ले त ना बाकिर कुछ दिन खातिर आके आपन डेरावन चेहरा देखा गइल रहे।

हमरा होश में भारत का तीन बेर युद्ध के संकट से गुजरे के पड़ल । एक बेर चीन का साथे आ दू बेर पाकिस्तान का साथे । युद्ध में चाहे केहू हारे भा केहू जीते, बाकिर जान के जोखिम में डाल के सरहद पर लड़ेवाला दूनू देशन के जवान शहीद होले, जे आँख में जिनगी के झिलमिलात इन्द्रधनुषी सपना सहेजले अपना नवविवाहिता पत्नी से जाल्दिए लवटे के वादा क के जाले, बाकिर देश का बलि-वेदी पर अपना के हमेशा-हमेशा खातिर कुर्बान क देले । भारत के नौजवानन में देश खातिर मर मिटे के प्रेरणा जगावे खातिर लिखाइल कहानी ह **'देश खातिर'** ।

पुरुष वर्ग के नारी का प्रति देखे सोचे के नजरिया जग-जाहिर बा । जिनगी का धारा में पति के पतवार छूट गइला पर नारी के हाल बेसहारा नाव के हो जाला, जवन चाहियो के किनारा ना पा पावेले तबो हिम्मत आ विवेक से काम लेवेवाली नारी तरह-तरह के झंझावत सहत आ जिनगी का उलिटा धारा से लड़त आपन किनार पाइये के दम लेले। **'विधवा'** कहानी में अइसने नारी के चरित्र उकेरे के प्रयास भइल बा, जवन पति का साया से अलगा भइलो पर अपना लड़िकन के संभारे में खुद के लगा देत बिया आ पास-पड़ोस के गंदा निगाह वालन से अपना के बचावे में सफल होत बिया।

एकान्त में औरत के देख के पुरुष का मन में उठेवाला अन्तर्द्वन्द्व आ अन्तंत: अपना पर विजय के कहानी बा **'जवान साधु'** । पापी से ना बलुक पाप से घृणा आ परिस्थिति में बदलाव ले आवे के प्रयास करे के संदेश निहित बा एह कहानी में । एगो जवान साधु के आदर्श, संयम आ लोक कल्याण के भाव प्रगट करे के उद्देश्य से एह कहानी के रचना भइल बा ।

'रात बरसात के' खाली देखले-सुनल ना, बलुक अपनो भोगल यथार्थ के कहानी ह । निम्नमध्यवर्गीय भा निम्नवर्गीय परिवार खातिर मकान के समस्या कवनो नया नइखे। खपड़ैल मकान चाहे फूस का पलानी में बेमार लड़िका के लेके बरसात के रात बितावे वाली एगो बेबस नारी के करुण कहानी ह 'रात बरसात के' । अपने भूखल-पियासल रह के नासमझ बेमार लड़िका के दिलासा देत आ टूटही छाता के भीतर गुदरा ओढ़ा के सुतावे के उतजोग करे वाली औरत के ई कहानी हमरा जिनगी के बहुत करीब से गुजरल लागेले ।

'भिखारिन के राजकुमार' कहानी में साधन बिहीन गरीब भिखारिन आ ओकरा बेटा का भुखाइल मन के वेदना, संपन्न परिवार के एगो पुत्रविहीन नारी के बेटा खातिर तड़प आ सामंती विचारधारा से लैश निहालचंद के गरीबन का प्रति पलल मानसिकता उजागर भइल बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

दहेज के दानव पता ना कतने मासूम लड़कियन के जिनगी तबाह क देत बा । भले एह समस्या में नवीनता ना होखे बाकिर ई कैंसर के बेमारी नियर पूरा समाज में फइल के अपना गिरफ्त में ले चुकल बा । लड़की का बाप पर एकरा भयावहता के पड़े वाला असर के चित्र उकेरे खातिर लिखाइल बा **सोना के परख** । एगो लड़की का तरफ से दहेज ना लेवेवाला परिवार में शादी करे के निश्चय के संदेशो एह कहानी का माध्यम से पाठक तक पहुँचावल बा । पढ़ल-लिखल लइकिन का खुदे हिम्मत करे के पड़ी, माँ-बाप का साथ देवे के समझदारी देखावे के पड़ी; तबे दहेज-दानव से समाज का छुटकारा मिल सकी ।

पिता आ पत्नी का बीच जीयत एगो पढ़निहार नौजवान के चित्र उकेरल बा **तिकोन** में । पिता के आदेश, पत्नी के सुकोमल मनोभाव आ दूनू से जूझत नौजवान का पीड़ा के उजागर करेवाला तीन गो पत्रन का माध्यम से लिखल '**तिकोन**' एगो नया प्रयोग ह।

संकलन के आखिरी कहानी '**संकल्प**' में आज का राजनीति में फइलल मूल्यहीनता आ भ्रष्टाचार उजागर भइल बा । साथ ही ओह से परेशान आम आदमी का भीतर उठेवाला विरोध के उफानो संकल्प का रूप में प्रगट भइल बा । हमार मान्यता बा कि आम आदमी के जारूकता बिना सामाजिक उत्थान आ गाँवन के सही विकास संभव नइखे । आदमी जब जात-पाँत, ऊँच-नीच आ धर्म-सम्प्रदाय से ऊपर उठ के सोचे लागी तब से समाज आ देश में सुख का सुरुज के लाली लउके लागी।

अपना कहानियन का बारे में हम साफ क दिहल चाहत बानी कि एमें कतहीं सीधे वर्ग-संघर्ष नइखीं देखवले बाकिर हर कहानी में कवनो ना कवनो सामाजिक विषमता के पाठकन का सोझा ले आके ओकरा के पाटे का ओर संकेत जरूर कइले बानी । हमरा समझ से आदमी विचारशील प्रानी ह । अगर कवनो समस्या का रू-ब-रू होई त ओकरा में एगो बैचारिक क्रान्ति आई । कवनो क्रिया का साक्षात्कार के बाद जवन प्रतिक्रिया होई, उहे सामाजिक बदलाव के राह खोली । बेकारी, घुसखोरी, सामाजिक विषमता, दहेज-त्रासदी, पारिवारिक विघटन, राजनीतिक मूल्यहीनता आ गरीबी जइसन विषयन के कथावस्तु का रूप में लेके हम आज का आदमी का जिनगी के चित्रित करे के प्रयास कइले बानी । एह तरे प्राय: ओही घटनन के हमरा कहानियन में जगह मिलल बा जवना का बीचे हमार कहानीकार साँस ले रहल बा ।

जइसन कि पहिले बता चुकल बानी, हम गद्य आ पद्य के अधिकांश विधन में कलम चलवले बानी । एह से कहानी विधा पर अपेक्षित समय दिहल संभव नइखे भइल। तबो ई महसूस कइले बानी कि कुछ बात अइसन बा जवन कहानिये का माध्यम से ठीक ढंग से कहल जा सकेला । एह से जब कहानी का साँचा में ढले वाला विचार दिमाग में चक्कर काटेला त ऊ दू-चार बइठक में कहानी के रूप ले लेला । हम कहानी के कवनो प्रारूप पहिले तइयार क के प्रायोजित रूप में कहानी ना लिखीं, बलुक लिखते में कहानी आपन रूप आ विस्तार पावत जाले । हँ, जतना बेर कहानी के कॉपी करेके पड़ेला ओतने बेर ओमें थोड़-बहुत सुधार के जरूरत महसूस होत रहेला, जवन कथ्य कम शिल्प के कसावट आ चुस्ती में ज्यादा मददगार होला । एही से कहीं छपला का बादो कहानियन के पाण्डुलिपि हम अपने हाथे तइयार कइल ज्यादा उपयोगी मानीले ।

www.bhojpurisahityangan.com

कवनो रचना में विचार जब कलम से निकल के कागज पर आवे लागेला त ओकर आधार शब्द होला जवन जुड़ के भाषा के रूप लेला । शब्द अइसन ईंट ह जवना के जोड़ के भाषा के इमारत खड़ा कइल जाला । एह से कवनो कहानीकार का अपना कहानी में प्रयोग होखेवाला शब्दन पर विशेष ध्यान देवे के चाही। हमरा विचार से लोकजीवन में घुलल-मिलल कवनो भाषा से आइल शब्दन के प्रयोग में लेवे के चाहीं। हँ, भोजपुरी बनावे खातिर शब्दन के तोड़-मड़ोर क के लिखे के हम जरूर खिलाफ हईं। हमरा विचार से भोजपुरी का अस्मिता के रक्षा का साथे दोसरो भाषा का शब्दन से तालमेल बनल रहे त भोजपुरी ज्यादा लोगन खातिर ग्राह्य बनी । एह से जरूरत का मोताबिक तत्सम, तद्भव, देशज आ विदेशी सब तरह का शब्दन के प्रयोग करे के हम हिमायती रहीले । पात्रन के अनुकूल शब्द आ भाषा के प्रयोग कहानी खातिर ठीक मानीले । हमरा कहानियन में अइसनके भाषा के प्रयोग भइल बा ।

कहानी में शैली के आपन खास महत्व होला आ इहे एगो कहानीकार के दोसरा से अलग पहचान करावे में मददगार होला । हमार कहानी कवनो एगो लीख पर ना चल के अलग-अलग ढंग से लिखाइल बाड़ी स । कुछ कहानी कथोपकथन शैली से शुरू होके वातावरन के सिरिजना करत बाड़ी स । **'प्रश्नचिह्न 'आ' रात बरसात के'** कहानियन के शुरूआत एही ढंग से भइल बा । कुछ कहानी प्रकृति-चित्रन से शुरू होके पात्रन का माध्यम से आगे का घटना से जुड़ जात बाड़ी स । **'हादसा', 'जवान साधु'** आ **'भिखारिन के राजकुमार'** कहानियन में घटनन से जोड़ेवाला प्रकृतिचित्रण के देखल जा सकेला । हमार कुछ अइसनो कहानी बाड़ी स, जवनन में सीधे-सीधे कवनो पात्र के ले आके कहानी के आरंभ कइल गइल बा, आ बाद में जरूरत का मोताबिक घटना-क्रम के मोड़े के प्रयास भइल बा । देश खातिर आ **सोना के परख** के आरंभ एह बात के सबूत बा । घटना-सूत्र के जोड़े खातिर कई कहानियन में चिट्ठी का माध्यम से कहानियन के जियतार बनावल बा । **'टूटत रिश्ता', 'विधवा'** आ **'रात बरसात के'** कहानियन में पत्र से घटना के जोड़ल गइल बा । कुछ कहानी अइसनो मिलिहें स जवनन में क्लाइमेक्स भा मुख्य घटना पहिले देके बाद में ओकरा के प्रारंभ का घटना से ताल-मेल बइठावल बा । **'टूटत रिश्ता'** में अइसन देखल जा सकेला । **'तिकोन'** तीन भाव भूमियन पर लिखल तीन गो चिट्ठियन के जोड़ के लिखल कहानी ह जवना में तीन कोन से मुख्य पात्र मनमोहन का चरित्र पर प्रकाश डालल बा । ई हमार एगो नया प्रयोग ह, जवन हमरा नजर में कहानी लिखे के एगो असरदार शैली हो सकत बा।

अन्त में, सब बातन का निचोड़ के रूप में कहल जा सकेला कि हमरा कहानियन में समसामयिक घटनन के आधार बना के कथावस्तु के गठन कइल बा, जवना से आज के आम आदमी सीधा-सीधा जुड़ल बा आ ओकरा त्रासदी से बेचैन होके ओकरा से मुक्ति पावे खातिर कवनो ना कवनो रूप में जुझ रहल बा । कहानी में शब्द विन्यास भोजपुरी क्षेत्रन में प्रचलित हर तरह का शब्दन के लेके भइल बा, जवन कवनो भाषा से आके भोजपुरी में घुलमिल गइल बाड़े स । पात्रन के अनुकूल भाषा में शब्दन के प्रयोग कइल बा । शैली में विविधता आ शिल्प में सतर्कता रख के कहानी के सजावे सँवारे आ प्रभावी बनावे के प्रयास कइल गइल बा ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

प्रश्नचिन्ह

www.bhojpurisahityangan.com

कहानी

1.	प्रश्नचिन्ह	.....	33
2.	टूटत रिश्ता	.....	36
3.	हादसा	.....	38
4.	देश खातिर	.....	41
5.	विधवा	.....	44
6.	जवान साधु	.....	47
7.	रात बरसात के	.....	50
8.	भिखारिन के राजकुमार	.....	52
9.	सोना के परख	.....	55
10.	तिकोन	.....	58
11.	संकल्प	.....	60

www.bhojpurisahityangan.com

प्रश्नचिन्ह

ओह दिन जगत मास्टर भौंचक्का हो गइले जब विनय बाबू पूछले- '' जगत मास्टर, रसदार नोकरी बूझे ल ?''

जगत मास्टर चिहा के कहले -''ना त ।''

''आरे, तूहूँ रह गइल मास्टर के मास्टरे । तू बूझबो करबऽ त कइसे । तहरा त रोज तीस-चालीस किलोमीटर साइकिल चला के स्कूल करे जाये के बा आ फेर साँझ ले हकासल -पियासल घरे आके बैल खानी काम में जुट जाये के बा । तहार नोकरी त तहरा देह के पहिलको रस सोख के गारल कागजी नीबू बनवले जाता, एही से नू तहरा रसदार नोकरी सुन के अचंभा लागत बा ।'' -विनय बाबू कहले ।

जगत मास्टर विनय बाबू के बात सुनके कड़क के जवाब दिहले -''तनी कम ढाहऽ । करेके किरानीगिरी आ बतियावे के लाटशाही। जेकरा देह में दम ना होई ऊ का खा के तीस-चालीस किलोमीटर साइकिल चलाई आ जेकरा एको धूर जमीन ना होई ऊ का अपना घर के देवाल कोड़ी ?''

विनय बाबू जगत मास्टर के समझावे का भाव से मोलायम आवाज में कहले-''जगत भाई, अनेरे नू हमरा पर खिसियात बाड़ । हम मान गइलीं कि तहरा देह में दम बा, आपन खेती-बाड़ी आ सभ कुछ बा, बाकिर हम जवन पूछलीं हँ तवना का बारे में जाने के पहिलहीं 'फायर' हो गइल ह ।''

विनय बाबू के बात अबकी बेर मास्टर का गरमइला मुँह पर पंखा के काम कइलस । कहले -''तू त सीधा बात कहे के जाने ल ना । जब कुछ सुन ले ल त दिमाग पाले आवेला । अच्छा, अब बताव, कवन ह रसदार नोकरी?''

''हँ त जान ल'' विनय बाबू कहे लगले-''जइसे रसदार आम चँपला से रस निकलेला, रसदार कागजी नीबू के जतने गारल जाला ओतने रस देला; रसमलाई भा रसगुल्लो में रस भरल रहेला, चाहे चाँप के पी लीं चाहे गार के कटोरा में बटोर लीं, चम्मच से काट-काट के खात रहीं आ बचल रस चम्मच में उठाके चुश्की लेत रहीं; ओसहीं कवनो-कवनो नोकरियो रसदार होले, जवना में खाली रसे रस भरल रहेला । जेने से चाहीं तेने से गार लीं, बोतल के बोतल ढार लीं, आ -चांस मिले त हजार के हजार मार लीं ।''

www.bhojpurisahityangan.com

''वाह, भाई विनय, साँचहूँ, तहार नोकरी रसदार बा, एहीसे बतकहियो रसगरे निकलता, रसगुल्ला आ रसमलाई खानी । तनी हिगरा-हिगरा के बताव कि हमहूँ रसदार नोकरी का बारे में जान लीं ।'' जगत मास्टर गद्गद् होके कहले ।

विनय बाबू चेहरा पर हँसी बिखेरत कहे लगले-''नोकरी छोट होखे भा बड़, एह से मतलब नइखे । अइसन टेबुल मिले के चाहीं जहाँ सरकारी लोन भा मुफ्त में कवनो तरह के रुपया बाँटे के काम होखे । ओमें प्रतिशत का हिसाब से कमीशन बान्हल रहेला ।'' विनय बाबू जगत मास्टर का पीठ पर हाथ फेरत जीभ के ओठ पर घुमावत कहले–'' अगर किस्मत से अइसन टेबुल मिल जाय त दिन भर में दू-चार सौ रुपया-रोज के आमदनी में कवनो झोला ना रहे ।''

जगत मास्टर विनय बाबू का ओर आँख फाड़ के देखत कहले–''एकर मतलब कि सरकार जवन खर्च गरीब जनता पर कर रहल बिया ओही में से लूट-लूट के तू लोग लखपती बन के ईमानदारी आ मेहनत से काम करेवाला मास्टर के बेवकूफ समझत बाड़। आ, समुझब काहे ना, तहरे लोगन के जबाना बा । नीचे से ऊपर तक जब तहरे अइसन लोग भरल बा तब भला तहरा लोगन का नोकरी में रस के कमी कइसे होई?''

''एही से त कहतानी कि तू रह गइल मास्टर के मास्टर त भड़कत बाड़ । जिनगी भर कमात रह जइब बाकिर तहरा नोकरी से रहे लायक दूगो कोठरी तक ना बन सकी, तबो लोग कही कि माहटरवा कुछुओ नइखन पढ़ावत स आ घरे मेहरारू से रोज दूगो नीमनका में से सुनहीं के पड़ी । लड़िको नीमन कपड़ा-लत्ता खातिर सियार खानी फेंकरते रहीहें स। जबाना के रंग देखऽ मास्टर! देखतारऽ नू, हमार ई छतदार मकान, जहाँ बइठल बाड़, महज पाँच साल का कमीनी से बनल बा, आ, तहरा नोकरी करत बीस साल हो गइल । आज ले का कइले बाड़, बता सके लऽ ?'' –विनय बाबू जगत मास्टर का मुँह का ओर धेयान से ताकत पूछले ।

जगत मास्टर का मुँह पर उदासी के एगो रेघारी खिंचा गइल । एक बेर उनका मकान का ओर नजर उठा के देखले त आपन चुअत खपड़ैल घर आँख का सोझा नाच गइल । ऊ सोचे लगले–''विनय ठीक कहत बाड़े । हमनी का राष्ट्रनिर्माता कहा के, टूटल घर में रह के, आ फूटल थरिया में खा के जिनगी गुजार देब । जवानी में मेहरारू के जहर अइसन बात, आ बुढ़ौती में बेटन के लात । इहे नू हमनी का जिनगी के सौगात बा। राष्ट्रनिर्माता.....आदर्शवादी.....। एह झूठ प्रशंसा के कवनो कीमत एह लूट-पाट के युग में बा का ?''

विनय बाबू जगत मास्टर के चुप्पी साधल देख के समझ गइले कि तीर सही जगहा पर बइठल बा । अबकी ऊधो के अपना गेयान के गठरी बेकार बुझाइल बा । उनकर धेयान तुरत ऊ पूछले –''का हो मास्टर, बहुत गहिराई से कुछ सोच रहल बाड़ । का बात बा ?''

जगत मास्टर दहिना हाथ से माथ खजुआवत जवाब दिहले –''विनय बाबू, साँचहूँ तहार टाट-बाट आ बतकही सुन के हमार दिमाग चकरा गइल बा । आज ले ईमानदारी

www.bhojpurisahityangan.com

आ कर्मठता का चलते शिक्षक के काम सभ से पवित्र मानत आइल बानी, जवना का सोझा एह बेरा प्रश्न-चिह्न लाग गइल बा ।.....अब त सोचतानी कि अपना दूनू लड़िकन के कवनो अइसने काम में लगाईं जवना से ईमानदारी के नोकरी कके चुअत घर में रह के मरेवाला एह मास्टर के लड़िको त अगिला पीढ़ी में पक्का मकान बना के लड़िकाईं में मास्टर बाप का हाथ से भोगल दुःख भुला के सुख से रह सक स ।''

विनय बाबू जगत मास्टर का पीठ पर एगो जोरदार थाप लगावत हँस के कहले –''आज ले ढेर लड़िकन के पढ़वंल बाकिर हमरा से सही पढ़ाई पढ़ल ।''

अभी बतकही होते रहे कि ओही बीच एगो सरकारी कार आके सामने रुकल जवना से एस० पी० का वर्दी में एगो नवयुवक उतर के आवत लउकल । ओके देखते विनय बाबू का चेहरा पर हवाई उड़े लागल । जगत मास्टर ओइसही निर्विकार भाव से बइठल रहले । नवयुवक जगत मास्टर के गोड़ छूके प्रणाम क के नम्रतापूर्वक पूछलस–''गुरुजी, हमरा के पहचनलीं ? राउर पढ़ावल चेला रामनिवास । रउरे साँचा में ढर के हम एस० पी० होके एह शहर में आइल बानी । राउर इयाद आवते सोचलीं हँ कि चल के गुरुजी के दर्शन क के आसिरबाद ले लीं ।''

जगत मास्टर का आँख में नेह के लोर छलछला गइल, ऊ रामनिवास एस० पी० के पीठ-ठोक के अंकवारी में भरत कहले–''रामनिवास, आज हमरा बुझाता कि हमार मास्टरी कइल सफल हो गइल ।''

विनय बाबू ई सभ टुकुर-टुकुर देखत रहले ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

टूटत रिश्ता

मनोहर बहुत उदास मन से घर से लवटले । उनका अइसन बुझाइल कि संयुक्त परिवार के पाया अब चरमरा चुकल बा । कब टूट जाई कहल ना जा सके । पहिलका बात सोच के उनका आँख से लोर टघर के गाल पर आ गइल । ऊ पाकिट से रूमाल निकाल के धीरे से आँख पोंछ लिहले आ सोचे लगले –''बाबू जी आधा पेट खा के आ दोसरा से निहोरा कके कर्जा-पइँचा लेके हमनी के पढ़वलीं-लिखवलीं आ जब हमनी के नोकरी-चाकरी भइल आ सुख भोगे के समय आइल त उहाँका दुनिया से विदा हो गइलीं । अबो माई जीयत बिया आ जब कहे लागेले कि कइसे ऊ अपना खाना में से निकाल के अपने आधा पेट खाके हमनी के खिया-पिया के सुता देत रहे आ कबो खाना ना बँचला पर अपना मुँह में 'कुछ'' डाल के एक् लोटा पानी पी के सुत जात रहे । आज कतना बदलाव आ गइल बा । बाबूजी त सरग सिधारिये गइलीं, बाकिर माई बड़लो बिया त केहू ओकरा के ईमानदारी सै देखभाल करे वाला नइखे । ठीके कहल बा कि एगो माई भा बाप कतनो लड़िकन के पाल-पोस सकेले बाकिर कतनो लड़िका मिल के एगो माई भा बाप के परवरिस ना कर सकस ।

मनोहर आपन परिवार लेके एगो देहाती स्कूल में मास्टरी करत रहले । कहे खातिर महीना में तीन हजार रुपया से अधिके मिलत रहे, बाकिर महँगी के जबाना । अपना चार गो बाल-बच्चन के लेके पढ़ाई-लिखाई आ अन्न-बहतर से लेके नून-तेल-लकड़ी में खर्च करत-करत पता ना महीना के बीस-पच्चीस तारीख ले सभ रुपया कइसे 'फुर्र' से उड़ जात रहे । तेहू पर कोढ़ में खाज नियर देहे-देहे बेमारी का चलते महीनो में पाँच-सात सौ रुपया के खर्च करीब साल भर से बढ़ गइल रहे जवन पिंड छोड़े के नाँव ना लेत रहे । एने दूगो लड़की ताड़ खानी बढ़त जात रहली आ एगो बड़का लड़िका ओही साल से कवलेजो में पढ़े लागल रहे । ऊ सोचे लगले–''खाये-पीये, पढ़ावे-लिखावे आ दवा-दारू के खर्च एह बेरा जरूरी बा । एही में पइसा नइखे आँटत तब दूनू सेयान होत लड़कियन का शादी खातिर रुपया कइसे बँचावल जा सकेला । एकरा अलावाँ एह दूनू लड़कियन से बड़ भतीजी बाड़ी स, जिन्हनी के शादी पहिले करे के पड़ी, आ, एकहेगो शादी में कम से कम दस-दस पनरह-पनरह हजार रुपया के अपना ओर से सहजोग देबहीं के पड़ी । आखिर ई सभ रुपया कहाँ से आई !''

सोचत-सोचत मनोहर के माथा चकराये लागल रहे ।

× × × × ×

घर से अइला पर उदास चेहरा देख के प्रिया पंखा हाँकत अपना पति से

www.bhojpurisahityangan.com

पूछली–''काहे उदास लागत बानी, घर के समाचार ठीक बा नू कि रउरे तबीयत कुछ गड़बड़ा गइल बा ?''

''हमरा अइसन बेईमान आ देहचोर आदमी के देखते घर के 'टेम्परेचर' बढ़ जाला। अब बुझाता कि घर के समाचार कबो ठीक ना रही ।''

''कवना बात के रउआ बेईमान आ देहचोर बानी ?''

'' तू ना बूझबू । बूझेवाला त इहे बूझत बा । जानते बाड़ू कि जबसे तहरा बेमारी में महीना में पाँच-सात सौ रुपया के खर्च बढ़ गइल तबसे भइया का हाथ में महीने-महीने रुपया दिहल बन्द हो गइल । हम कतना खर्च आ पेरशानी में बानी ई बात उहे का, छोटो भाई लोग नइखे सोच पावत । जेकरा देही कम खर्च बा ऊ भइया का हाथ में रुपया थम्हा के ईमानदार गिनाता आ हम खर्च से तबाह होके कुछ नइखीं दे पावत त बेईमान हो गइल बानी,.....। आ, देहचोर त हम तबे से गिनाये लगलीं, जबसे चारों ओर से आपन ध्यान हटाके पढ़े-लिखे लगलीं । आजो देखते बाड़ू कि पढ़े के बेमारी हमरा से ना छूटल । रुपया ना दीं त बेईमान आ बइठ के पढ़त-लिखत रहीं त देहचोर ।''

''एमें राउर कवन दोष बा ?'' प्रिया समुझावत कहली–''आपन जतना फर्ज ह ओतना जरूर करे के चाहीं कि परिवार के रिश्ता बनल रहे । रउरे का एकरा खातिर हमहूँ तकलीफ सह के परिवार के समेट के रखे के कम उपाय ना कइलीं, बाकिर पाछे बुझाइल कि रिश्तो जुटल रहे खातिर कुछ अलग रहल जरूरी बा कि भिन्न विचार-वाला लोगन से टकराव के मोका कम लागे ।''

मनोहर लमहर साँस लेके कहले –''हमनी के कवनो में कल्यान नजर नइखे आवत। अब हमनी के सीधापन आ ईमानदारी के गलत अर्थ लागे लागल बा । अइसन बुझाता कि परिवार का रिश्ता के जड़ में प्रेम-स्नेह ना, बलुक रुपया रह गइल बा । साइत परिवार का मकान के ईटा जोड़े वाला सीमेन्ट अब रुपये बन गइल बा । तबे त केहू केहू के मूल्यांकन ओकरा रुपये देहला से कर रहल बा, प्रेम आ स्नेह देहला से ना । अगर अइसन बात ना रहित त कम से कम हमार निश्छल विचार आ सभका प्रति प्रेम के कीमत जरूर समझल जाइत । जवन काम हमनी जोड़े खातिर करत बानी तवन तूरे खातिर समझल जाता ।''

''चिन्ता छोड़ीं ! देह गलवला से कवनो फायदा नइखे । गोड़-हाथ धोईं, खाना तइयार बा । स्कूल जाये के देर होई ।'' कह के प्रिया एक तरफ पंखा रखके गोड़ धोए खातिर लोटा में पानी ढार के ले आवे भीतर चल गइली। तले छोटका लड़िका निर्मल हाथ में एगो चिट्ठी लेले आइल आ मनोहर का हाथ में थमा दिहलस । ई चिट्ठी उनका छोट भाई रंजन के भेजल रहे । मनोहर चिट्ठी पढ़े लगले–

''पूज्य भैया,

सादर प्रणाम ।

बहुत दु:ख के बात बा कि रउरा घरे अइल-गइल कम क देले बानी । अइसन ना होखे के चाहीं । भइया के यथासंभव सहयोग आ उत्साह देत रहे के चाहीं । आपन समाचार लिखब ।

राउर अनुज
रंजन''

मनोहर चिट्ठी पढ़ के टेबुल पर रख दिहले आ ओमें लिखल बात के सोचे लगले । तबतक पड़ोसी के रेडियो से बाजत कबीर के भजन कान में पड़ल–''दो पाटन के बीच में साबिक बचा न कोय ।''

●

www.bhojpurisahityangan.com

हादसा

जुलाई के महीना । आसमान में करिया-करिया बादल बहुत तेजी से पूरब से पच्छिम का ओर दउड़त रहे । बुझाय जे अब तब में धरती पानी से सराबोर हो जाई । नीरज झटकल कवलेज में पहुँचले ।

''आईं, नीरज बाबू, रउआ त एने आइले गइल छोड़ देले बानी ।'' कवलेज के किरानी मनोज मुसकुरात कहले ।

नीरज चेहरा पर के पसेना पोंछत पूछले–''सुनलीं ह जे ऑनर्स के रिजल्ट कवलेज में आ गइल बा । हमार .....।''

''आरे रउरा रिजल्ट का बारे में का कहे के बा ! नीमन मार्क्स आइल बा ऑनर्स में, बाकिर बिना खर्च-बर्च के मार्क्स ना देखाएब .....हँऽ ।'' मनोज चश्मा का भीतर से आँख मटकावत कहले ।

''पहिले रिजल्ट देखाईं, एकरा बाद बाजार में चल के छक के रसगुल्ला, रसमलाई आ जवन चाहीं तवन खाईं ।'' नीरज हाथ पकड़ के मनोज के ऑफिस में ले गइले आ आपन नम्बर देखे लगले । सिर्फ दस नम्बर से फर्स्ट क्लास छूटल रहे । नम्बर देखते उनका गोड़ का नीचे के धरती खसके लागल । उनका आँख का आगे अन्हार आ मुँह में कड़ुआहट फइल गइल ।

''नम्बर त कवनो बेजायँ नइखे नीरज बाबू, काहे अतना उदास हो गइलीं ?'' मनोज टोकले ।

''रउआ नइखीं नूं समुझत मनोज बाबू, एगो जबाना रहे कि रउआ मैट्रिक पास क के कवलेज में किरानीगिरी पा गइलीं, बाकिर एह बेरा बी० ए०, एम० ए० क के लोग मारल-मारल फिरत बा, त कइसे मान लीं कि एह नम्बर से हमार जिनगी सँवर जाई ? थोड़े नम्बर से क्लास छूटला से का तकलीफ होला ई उहे जानेला जेकरा साथे ई घटना घटल रहेला ।''

''खैर, जवन भइल तवन । भइल आगे खातिर सोचे के चाहीं । अब त कम्पटीशन के जबाना बा । मेहनत करीं कि कवनो सर्विस खातिर कम्प्लीट कर जाईं ।'' मनोज नीरज का चेहरा के भाव बाँचत धीरे से कहले ।

www.bhojpurisahityangan.com

नीरज ऑफिस से निकल के धीरे-धीरे बाहर चल दिहले । मनोज चश्मा का भीतर से नीरज का ओर लालच भरल निगाह से ताकत रह गइले, बाकिर कुछ कहे के हिम्मत ना पड़ल।

नीरज अपना बाप के एकलौता बेटा रहले । उनका से छोट तीन गो बहिन रहली स, जवन उनका से करीब तीन-तीन बरिस के छोटाई के रहली स । दूगो के त शादी के उमिरो हो गइल रहे। लड़की के शादी अब उमिरे पर ना, बलुक तिलको-दहेज पर निर्भर करत बा । नीरज के बी० एस-सी० (ऑनर्स) के डिग्री लेबे में उनका बाबू जी के समूचा आर्थिक सामरथ लाग गइल रहे । अब नीरज का नोकरी पर तीनों लड़कियन के शादी निर्भर करत रहे काहे कि उनकर बाबूजी रमानाथ घर-गिरस्ती से जइसे-तइसे रुपया के इन्तजाम कके उनका के पढ़वले रहले । अब आगे के मोटगर खर्च खातिर खेत बेंचल छोड़के दोसर कवनो रास्ता ना रह गइल रहे । अगर उहो बेंचा जाइत त पूरा परिवार का मुँह में जाबी लाग जाये के परिस्थिति आ सकत रहे ।

नीरज अपना परिस्थिति से पूरा परिचित रहले, एह से तत्काल कवनो उपाय ना देख के कुछ लड़िकन के ट्यूशन पढ़ा के डेढ़-दू सौ रुपया के जोगाड़ कर लिहले जवना से घर के नून-तेल के खर्च आ अपना नोकरी खातिर दरखास्त का साथे 'पोस्टल ऑर्डर' भेजे के खर्च निकले लागल, बाकिर ई परिस्थिति उनका खातिर ओह मुसाफिर नियर रहे जे बीच धार में आन्हीं में नाव में बइठल किनारे पहुँचे के कल्पना करत होखे ।

ऊ लगले नोकरी खातिर दरखास्त भेजे । थोड़े दिन तक त हौसला बुलन्द रहे कि योग्यता बा त कहीं ना कहीं नोकरी होइबे करी, बाकिर जइसे-जइसे समय बीते, मन के कली मुरझाये लागल । दरखास्त .....दरखास्त.....दरखास्त..... इन्टरभिउ.....इन्टरभिउ.....। दस गो जगह खातिर दस हजार के भीड़ । एक से एक अउवल नम्बर ले आवे वाला आ पैरवी वाला लोग .....। केहू मिनिस्टर साहेब के भतीजा, त केहू एम. पी. साहेब के खास आदमी । केहू-केहू त पचास-पचास हजार भा ओहू से अधिका रुपया देके नोकरी लेवे खातिर तइयार रहे । एह धरम धक्का में नीरज अपना के एगो पढ़ल-लिखल बेसहारा महसूस करे लगले, जे ना कवनो मिनिस्टर से जात-बिरादरी के नाता जोड़ पावत रहले, ना कवनो एम. पी. भा एम. एल. ए. के 'खास आदमी' के प्रमाण पत्र पा सकले । अब उनका चारो तरफ अन्हारे अन्हार लउके लागल ।

एक दिन नीरज पटना से हारल-थाकल आके दुआर पर का कुर्सी पर बइठ के रुमाल से आँख पोंछे लगले । रमानाथ बैलन के गोबर फेंक के अइले त नीरज के आँख पोंछत देख के पूछले–

"का समाचार बा हो ! काहे उदास लागत बाड़ऽ ? तबीयत ठीक बा नू ?"

"जी ।"

"इन्टरभिउ कइसन भइल ह ?"

"ठीक भइल ह ।"

www.bhojpurisahityangan.com

''सभ ठीके बा त काहे उदास बाड़?''

''सभ ठीक बा, बाकिर नोकरी होखे के कवनो ठीक नइखे ।''

''से काहे हो ?'' रमानाथ उत्सुकता से पूछले ।

''बाबूजी, अब खाली पढ़ले से नोकरी होखेवाला नइखे ।''

''त इन्टरमिउ में पढ़ले में से नू पूछल जाला, दोसर का होला ?''

''बाबूजी, इन्टरमिउ में पढ़ल-लिखल त सभे जाते बा, ओकरा अलावा अब मंत्री आ नेता के पैरवी खोजल जाता भा नोट के पुलिन्दा । जेकरा एमे से कवनो नइखे रहत ओकरा कवनो हालत में नोकरी नइखे हो सकत ।'' नीरज कह के चुपा गइले ।

बाप-बेटा के बतकही सुन के नीरज के माई आ तीनों बहिन दुआर पर आ गइल रहली आ धेयान से दूनू जना के बतियावल सुने लगली ।

रमानाथ जबाना के गरियावत कहे लगले–

''छि.....छि: अइसन अन्हेर ! दिन-दुपहरिया डकइती आ केहू देखे सुनेवाला ना! जवन ऊँजी-पूँजी रहे तवन घर से लगा के पढ़ा दिहलीं। अब त तनी-मनी जमीन रह गइल बा । इहो बेंच के घूस में दे दिहल जाय तबे नू कवनो नोकरी मिल सकत बा ।.....घबड़ा मत नीरज, जब अइसने होई त हम ओतना क के पढ़वलीं त इहो करे के तइयार बानी ।''

नीरज का मुँह से कुछ ना निकलल । ऊ अपना सेयान बहिन गंगा का ओर ताके लगले, जवना के चेहरा मुरझाइल लागत रहे, आ आँखिन में कवनो सपना झिलमिलात रहे ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

देश खातिर

रतन अपना माई-बाप के एकलौता बेटा रहस। देह से हट्टा-कट्टा नौजवान, गोर रंग आ चमचमात चेहरा देख के गाँव-जवार का लोगन के पलक ना गिरे । देह आ दिमाग-दूनू से भरल-पूरल रतन के बी. ए. के परीक्षाफल जब प्रथम श्रेणी में निकलल त कतने जवानन के आँख लागे लागल उनका सफलता पर । लागो काहे ना, रूप आ गुन के साथ बड़ा भाग से होला ।

रतन के माई सविता कुछ दिन से बेमार रहे लागल रही, एही से घर सम्हारे खातिर पतोह के जरूरत खटके लागल । एक दिन ऊ अपना पति जगमोहन से कहली-''रउआ हमरा जिनगी में बेटा के विवाह नाहियें करब का ?''

''अइसन बाउर बात तू अपना मुँह से काहे निकालत बाड़ू ?''

'' त का कहीं ? राउर चुप्पी देख के त हमार अकिल चकरा जाता । देखते बानी कि बेमार रहला से हमरा से घर-गिरस्ती के काम नइखे हो पावत । काम करत-करत मिजाज हाँफ जाता । हमरा बुझाता कि अब ई देह जादे दिन तक ना चली । आखिर आज ना काल्ह रतन के बियाह करबे करब । हमार जाँगर चलते में हो जाइत त गा-बजा के आ पतोह के देखके आँख जुड़ा लेतीं ।'' सविता उदास मन से कहली ।

''तू खाली हमरे दोष देत बाड़ू । बेटा के कहनाम बा कि नोकरी करब तबे बियाह करब । माई-बाप का कपार पर बोझा लादे खातिर हम बियाह ना करब ।''जगमोहन तनी रुखाई से कहले ।

''उनकर बियाह अगर पाँच बरिस तक ना होई तवना खातिर केहू के मउवत पेंड़ा ना जोही । ठीक बा । बाप-बेटा एकवट के जवन चाहीं तवने करीं । अबसे हमरा कुछ कहे के नइखे । जबले पार लागत बा तबले देह ठेंठावत बानी, जब आँख मूँद लेब त जे रही से देखी ।'' कहके सविता डबडबाइल आँख आँचर से पोंछे लगली ।

''तू बहुत जल्दी घबड़ा जालू । बुझाता कि पुड़िया में परान बसल बा । चाहत रहलीं ह कि रतन एयर फोर्स का नोकरी खातिर दरखास्त देले बाड़े । लिखित परीक्षा में चुनावो हो गइल बा । कुछ महीना में मेडिकल टेस्ट वगैरह होके नव-छव हो जाई त बियाहो करे में उत्साह रही । अच्छा रिश्तेदार अइहें आ नीमन परिवार में बियाह हो जाई बाकिर जब तहार इहे इरादा बा त पर-पाहुन आवते जात बाड़े-रतन के समझा-बुझा के कहीं रिश्ता पक्का कर लेत बानी ।'' जगमोहन सविता के समझवले आ रतन का

www.bhojpurisahityangan.com

बियाह के तइयारी में लाग गइले ।

ओह दिन सविता का खुशी के ठेकाना ना रहे, जब इन्नर के परी नियर पतोह उतार के घर में ले अइली । टोला-मोहल्ला का मेहरारून के भीड़ से उनकर आँगन ठसमठस भर गइल । सभे मुँहदेखी के रसम क के सविता के भाग सराहत अपना-अपना घरे गइल ।

एने बरियात से लवटल पाहुन लोग का स्वागत आ गप-शप में जगमोहन लागल रहले ।

साँझ के रतन अपना साथी लोगन में घुलमिल के बतियावे लगले । जीवन कहले-''भाई, तहरा भाग के जतना सराहल जाय, कमे बा । एके साथ सभ पा गइलऽ।''

जौहर बात के आगे बढ़ावत चुटकी लिहले-''आरे उस्ताद ! खुदा का खास कलम से तहार भाग लिखाइल बा। एके साथे नोकरी आ .....केहू खुशकिस्मते के नसीब होला । भाभीजान से हमार बहुत-बहुत मुबारकबाद कह हीहऽ।''

विनायक मुस्कात कहले-''बाकिर दूनू के एके साथे निमाहल बहुत मुश्किल काम बा । पाँच दिन के बादे कली के छोड़ के भँवरा के उड़ जाये के पड़े त कइसन बुझाई?''

रतन जवाब दिहले-''भाई, भँवरा उड़ेवाला छोट प्रानी, एक जगह कइसे रही, बाकिर रतन के पैदाइश कुछ करे खातिर भइल बा, से तू लोगन बहुत पहिले से जानत बाड़ । पाँच दिन का बाद हमरा भँवरा खानी उड़त देश के पहरादार होके चल जाये के बा । जानते बाड़ लोगन कि केतना महत्व के ई काम ह । एक तरफ घर-परिवार के मोहब्बत आ दोसरा तरफ मुल्क खातिर आपन फर्ज । कवन ज्यादा जरूरी बा, ई हम खुद समझ रहल बानी । जिनगी अपना रफ्तार से चलत रहेले, बाकिर महत्त्वपूर्ण क्षण कबो-कबो आवेला । हमरा खातिर अभी बियाह के कवनो जरूरत ना रहल ह बाकिर माई खातिर एगो नीक पतोह के जरूरत रहल ह से पूरा हो गइल ।''

''रतन भाई, तू दिल के बहुत मजबूत बाड़ । अपना मित्र-मंडली में हमनी के तहरा पर नाज बा ।'' कह के जौहर विनायक से कहले--'' आज इनका बहुत-बहुत काम बा, फुरसत दे दिहल जाव ।''

थोड़े देर में सभे रतन से हाथ मिला के लवट गइल ।

बियाह के पाँचवाँ दिन पूरा होते रतन के एयर फोर्स का नोकरी पर जाये के दिन आ गइल । उनकर नव विवाहित पत्नी प्रीति रतन के जाये के तइयार देख के घूघ का भीतर से आँख में झिलमिलात लोर भरले मीठ आवाज में रून्हाइल कंठ से पूछली-

''कब लवटब ?''

''बहुत जल्दी; छुट्टी मिलते चल आएब ।।''

प्रीति के धीरज बन्हावत रतन कहले ।

प्रीति रतन के कान्ह पकड़ के फफक-फफक के रोवत फेर पूछली-''सुनले बानी कि रउआ लड़ाइयो में जाये के पड़ी ।''

रतन प्रीति के छाती से सटावत उनकर आँख अपना दहिना हथेली से पोंछत जवाब दिहले-

''प्रीति, हमार नोकरियो अइसन बा कि देश खातिर दुश्मन के ललकार के मारहीं के पड़ी, बाकिर अइसन पवित्र काम करे के मोका हरदम थोड़े आवेला ? आ, अइलो पर ई काहे बूझल जाय कि हमनी दुश्मनो से कमजोर पड़ब । भारतीय जवानन के बहादुरी जग जाहिर बा ।.....प्रीति, एगो फौजी जवान के पत्नी भइला का नाते मन

www.bhojpurisahityangan.com

के कबो काँच ना करेके चाहीं । जब दुनिया से विदा होखे के समय आ जाला त बिछावन पर पड़लो आदमी विदा हो जाले, ना त मोर्चा पर लड़तो में दुश्मन से बाल बाँका ना हो सके । हमरा एहू युग में विश्वास बा कि राजपूत मर्द भा मेहरारू कवनो युग में मुल्क के इज्जत रखले बा आ राखी । आखिर उहे खून नू हमनियों का नस में दउड़त बा । तब चिन्ता कवना बात के ?''

रतन के बात सुनके प्रीति के आँख पहिलहीं सूख चुकल रहे । ऊ जवाब दिहली-''ठीक बा। हमहूं ओही परिवार के बेटी हईं जहां बाबूजी लड़िकाइयें से जोन ऑफ आर्क, रजिया सुलतान आ लक्ष्मी बाई जइसन वीर औरतन के कहानी सुनावत रहल बानी । रउरो विश्वास रखीं, प्रीतियो में हिम्मत के कमी नइखे ।''

''हमरो तहरा से इहे उमेद रहल ह; प्रीति ! ई हमार सौभाग्य बा कि तहरा जइसन हिम्मत देबे वाली पत्नी पवले बानी ।'' पांव छू के प्रेम-भरल नजर से ऊ उनका ओर तकली । मुँह से बोली ना निकलल ।

रतन एक बेर प्रीति के दमकत चेहरा का ओर तकले आ उनकर पीठ थपथपा के '' हम बहुत जल्दी लवटब ''कह के झटका से कमरा से बाहर निकल के जगमोहन आ सविता के गोड़ छू के आशीर्वाद लेत दुआर पर लागल रेक्सा पर बइठ के चल दिहले। प्रीति अपना प्रीत भरल नजर से अपना प्रियतम रतन के एके टके ताकत रह गइली जबले ऊ आँख से अलोपित ना हो गइले ।

× × × × ×

करीब दू साल तक रतन के घरे आवे के मोका ना मिलल बाकिर चिट्ठी-पत्री आवत जात रहल । पाछे मालूम भइल कि नेफा लद्दाख क्षेत्र में चीनी सैनिक भारतीय सीमा पर आक्रमण कइले बाड़े आ दूनू देशन का बीच लड़ाई शुरू हो गइल बा । एक दिन देश भर के अखबारन में समाचार छपल-''अनेक दुश्मन सैनिकन का साथे बहादुरी से लड़त फौजी जवान रतन सिंह वीरगति पवले जिनका के मरणोपरान्त 'परमवीर चक्र' प्रदान कइल जाई।''

ई खबर देश में शहरन से ले के गाँवन तक आग का लपट खानी पसर गइल । बेटा का मरला के खबर सुनते सविता धरती पर गिर के बेहोश हो गइलीं । जगमोहन मर्द भइला का नाते दारूण विपत्ति के दु:ख भीतरे-भीतर दबा के सविता आ प्रीति के देख-रेख करत रहले ।

प्रीति के जब ई खबर मिलल त मन दृढ़ क के उठली आ घर का घेर में फुलाइल गुलाब के फूल तूरके एगो लमहर माला गूँथली आ घर में टँगल अपना शहीद पति का फोटो पर पहिना के हाथ जोड़ले धड़ाम से जमीन पर गिर गइली। गिरला के आवाज सुन के घर के आउर लोग दउड़ल, तबले प्रीति के प्रान-पखेरू देह के पिंजड़ा छोड़ के उड़ चुकल रहे ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

विधवा

''राधा,

तोहार विपत्ति के हाल जान के हमरा बहुत तकलीफ भइल । ई दइब के दीहल अइसन आफत ह कि दोसर केहू खाली समुझा-बुझा सकेला, अँगेजे के त अपने परेला। तोहरा ऊपर के प्रेम के छाया गइल बाकिर अपना लड़िकन के नेह के छाया देवे वाली अब तूहीं रह गइल बाड़ू, ई सोच के धीरज ध के अपना जिनगी के रक्षा करहीं के पड़ी। तू खुद सोच सकेलू कि अगर तू ही दुख में पागल होके दुनिया से विदा हो जइबू त तोहरा लड़िकन के का हाल होई । उमेद बा, हमरा बात पर विचार क के अपना लड़िकन का सुख-दुख के आपन सुख-दुख समुझत अपना जिनगी के हिफाजत से रखबू ।

तोहार बाबूजी
रमानाथ''

चिट्ठी पढ़ते राधा आउर जोर-जोर से फफक-फफक के रोए लगली। उनकर रोवाई रात के अन्हार चादर फारत दूर-दूर ले फइले लागल । बगल में सूतल सात महीना के लड़िका सरोज माई के रोवाई सुन के चिहा के जाग गइल आ चिल्लाए लागल । ओकरा से दू साल सेयान मनोजो के नींन टूट गइल आ माई के मुँह देखके रोवाइन चेहरा बना लिहलस । ओह नासमझ लड़िकन के राधा का रोवाई का बारे में का पता रहे कि ओकरा ऊपर विपत्ति के कतहत बड़हन पहाड़ टूट के गिर गइल बा, जवना से दबा के परिवार के लहलहात बगिया बीरान हो चुकल बा आ बाप का सनेह के छाया सदा-सदा खातिर ओकनी का ऊपर से उठ चुकल बा । अब दुख के गरमी बरसात आ ठंढक से रक्षा करेवाली सिर्फ एगो माई बिया । ऊ देखले रहले स दू दिन पहिले बाबू जी के खिलल हँसमुख चेहरा आ ओही रात का सवेरे टोला-मोहल्ला का खामोशी में पँवड़त माई के छाती पीट के चिल्लात -चादर से तोपल बाबूजी का लाश के लगे । ओकनी के साइत बुझाइल कि बाबूजी सुतल बानी, थोड़े देर में उठ के बइठ जायेब बाकिर फेर हरिहर बाँस के बनल टिकठी पर सुता के नाया कपड़ा में लपेट के उनका लाश के 'राम नाम सत्त

www.bhojpurisahityangan.com

ह' का आवाज के साथे उठा के ले गइल एगो तमाशा बुझाइल ।

लड़िका नासमझ भइलो पर ज्ञानी होले । दुनिया सचहूँ एगो खेल-तमाशा से अधिका कुछ ना ह । ओकनी के लड़िक-बुद्धि जहाँ ले समझ सकत रहे ओतना साइत ज्ञानियो लोग ना समझ सकेले; बाकिर माई के रोवाई सुन के ज्ञान पर अज्ञान के परदा पड़ गइल ।

राधा जोर जोर से चिल्लात सरोज के अपना छाती से लगा लिहली । ओकरा माई का आँचर के सहारा मिलल, जहां दूध का रूप में ममता आ वात्सल्य के सोता बहत रहे । ऊ माई के दूध पीयत चुपा गइल । राधा फेर मनोज के अपना लगे खींचत आँचर का छोर से दूनू आँख पोंछ लिहली । ऊहो चुप हो गइल ।

राधा अभी बियाह के सिर्फ चार गो वसंत देख सकल रहली कि अचानक उनका पति कमल के 'हार्ट एटैक' से मौत हो गइल । रमानाथ अपना एकलौती बेटी के बियाह सरकारी नोकरी करेवाला बाप-माई के एकलौता बेटा कमल का साथे कर दिहले कि लड़की छोट परिवार में आराम से रही।

कमल के बाप उनका बियाह से दू बरिस पहिलही सरग सिधार गइल रहले आ मतारी दम्मा के पुरान मरीज रहली, जे पति का मरला का बाद उनके चिन्ता में गलत-गलत कमल का बियाह के कुछ दिन के बाद एक रात सुतली से फेर सबेरे ना उठली । कमल जबले रहले, राधा का ना ससुर के कमी खटकल ना सास का मरला के विशेष दुख भइल । आपन छोट गिरस्थी ऊ धीरे-धीरे सम्हार लेले रहली । अबकी बेर पति के मौत उनका मन-प्रान के एकदम झकझोर के रख दिहलस ।

कुछ दिन ले त उनका समझ में ना आवत रहे कि ऊ का करस बाकिर समय का धारा में बहत दुख के असर धीरे-धीरे बहुत कम हो गइल । समय अइसन मलहम ह कि कइसनो घाव धीरे-धीरे भरिये देला। राधा पति का ओर से मन मोड़ के उनके रोपल मनोज आ सरोज जइसन बिरवा के पाले-पोसे में आपन सभ समय लगावे लगली । बेटा बाप के प्रतिबिम्ब होले-बहुत हद तक आकृति आ प्रकृति से । कमल के चाल-ढाल आ रूप-रंग के झलक लड़िकन में पा के ऊ ओकनी के खेल-तमाशा देखे में बिभोर हो जास। कबो-कबो सुतला रात के दूनू लड़िकन के सुत गइला पर कमल के इयाद उनका के पागल बनावे लागे । वासना भा विचार पर उमर के बहुत ज्यादा असर पड़ेला । जवानी के शोर में गेयान के जोर कम हो जाला । ओह समय कवनो सहारा के बहुत जरूरत पड़ेला । कुशल रहे कि ऊ सहारा एह विधवा खातिर मनोज आ सरोज का रूप में मिल गइल रहे । ई दूनू अइसन दूगो हथेली रहले, जवना के सहारा पा के राधा का गेयान के दीआ बुता ना सकत रहे ।

× × × × ×

एक दिन नाता में देवर लागेवाला राधा के पड़ोसी मुरलीधर जे गाँव में रह के खेती-गिरस्थी करस 'भाभी जी । भाभी जी !!' पुकारत आके आँगन में बिछावल खटियां पर बइठ गइले । उनका के देखते राधा अपना माथ पर से सरकल साड़ी के पाला ठीक

www.bhojpurisahityangan.com

क लिहली । मनोज आ सरोज मुरलीधर के खटिया पर बइठल देख के उनका आगे आ के ठाढ़ हो गइले स । राधा के ई समझ में ना आवत रहे कि मुरलीधर एक-ब-एक कवना मतलब से 'भाभी जी' पर अतना अपनापन देखावे आ गइले । उनका मन में तरह-तरह के विचारन के बवंडर उठे लागल । उनका अइसन बुझाइल कि कहीं कमल के ना रहला से अकेलापन के फायदा उठावे खातिर अपनापन आ सहानुभूति त नइखन देखावे आइल । उनका इहो मालूम रहे कि जबले उनकर सास आ पति रहले तबले मुरलीधर दुआर पर झाँकहूँ ना आवत रहले ।

जब कुछ देर ले मुरलीधर से केहू कुछ ना पूछल त ऊ अपने से चुप्पी तुरत कहले-''भाभीजी, कवनो तरह के दिक्कत होखे त हमरा से कहे में संकोच मत करीह। कमल भइया हमरा के बहुत मानत रहले ह । हमरा खातिर ऊ अतना कइले बाड़े कि उनकर एहसान हम कबो भुलाय वाला नइखीं ।''

राधा जवाब दिहली-''बबुआ जी, ठीके कहत बाड़ । कवनो दुख-तकलीफ के अपने आदमी से कहल जाला, बाकिर कुछ तकलीफ अइसनो होलां जवना के एह धरती पर रहके अपने भोगे के पड़ेला । ओकरा के कहलो से कवनो फायदा ना होला। .....हमरा अपना खातिर कवनो तरह के चिन्ता नइखे । तहरा भइया का बीमा के रुपया से एह लड़िकन के परवरिस नीमन से हो जाई । अब इन्हनी के पढा-लिखा के आदमी बना दिहल हमार फर्ज बा । हो सके त इन्हनी पर धेयान रखे के चाहीं ।''

''तहरा कहे के ना पड़ी । हम खुदे इन्हनी के देखरेख करत रहीले । मनोज पढ़े में तनी कमजोर बुझाता । कह त आके रोज एक घंटा पढ़ा जाईं ।.....का विचार बा?''-मुरलीधर राधा का चेहरा का ओर धेयान से देखत कहले ।

मुरलीधर का नजर से निकलत वासना के चमक के परखे में राधा का देर ना लागल । ऊ माथ नीचे कइले जबाव दिहली-''अभी मनोज के उमिरे कवन भइल । थोरे-बहुत अच्छर चिन्हावे-बतावे लायक त हमहीं बानी । जरूरत पड़ी त हम कहब ।''

''भाभी जी, हम जात बानी ।'' कह के मुरलीधर चल गइले । उनका जाते अंगना में ठाढ़ मनोज राधा से कहलस-''मम्मी, हम मुरली चाचा से ना पढ़ब।''

राधा मनोज के खिसियाइल चेहरा के ध्यान से देखत पूछली-''काहे बेटा ?''

मनोज कहलस-''एक दिन ऊ बाबूजी आ तोर नाँव लेके चाय के दोकान पर बइठ के गंदा गंदा बात कहत रहले ।''

''अच्छा बेटा, ऊ एह घरे कबो पढ़ावे ना अइहें ।'' कह के राधा मुरलीधर का अइला के बारे में गहिराई से सोचत अपना काम में लाग गइली ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

जवान साधु

•

पूरूब का छितिज पर भुवन भास्कर के अरून किरिन छिटकत रहे । फेड़न पर पंछियन के चहचहाहट से वातावरन रसगर हो गइल रहे । शिवमंदिर में 'बम् शिव..... ....हर-हर महादेव' के आवाज घहरात घंटा का आवाज में भुला जात रहे । सामने का फुलवारी से फूल तूरे वाला लोग रंग-बिरंगा फूलन के एकट्ठा क के अपना आराध्य भूतभावन भगवान शिव के प्रसन्न करे खातिर अपना काम में लागल रहले, त कुछ लोग बेल के कँटगर डाढ़ी निहुरा के बेलपत्तर आ केहू धतूर के फर तूरे में मगन रहले । आगे एगो बड़हन पोखरा रहे, जहाँ लड़िका से सेयान ले नहात, साबुन लगावत, कपड़ा बदलत गारत आ लोटा मल के अवढरदानी शिव पर जल ढारे के तइयारी करत रहले। कुछ छोट लड़िका डाँट-फटकार का बादो पोखरा में पँवरत आ छपकत रहले स ।

मंदिर का दक्खिन तरफ एगो यज्ञशाला रहे जवन कबो यज्ञ करे खातिर बनावल रहे बाकिर अब ओमें बाहर से आइल साधु-महात्मा आ के ठहरत रहले । यज्ञशाला का अगल-बगल रंग-बिरंग के फूल खिलल रहे, जवना पर भंवरा गुंजार करत रहले ।

यज्ञशाला में गौर बरन के एगो जवान साधु बइठ के भक्त लोगन के ज्ञान के उपदेश देत रहले । तेज के चमक से उनकर चेहरा, दमकत रहे । अइसन लागत रहे, जे कमे उमिर में शास्त्र-पुरान के मथ के ज्ञान के नवनीत पा के परम प्रसन्न आ संतुष्ट हो चुकल रहले। उनका हृदय का समुन्दर में राग-द्वेष के ज्वार-भाटा भा कवनो तरह का कामना के हलचल ना रह गइल रहे । उनका भीतर शान्ति, संतोष आ विरक्ति के अद्भुत संगम रहे। साधारन साधु से उनका में एगो लमहर अन्तर साफ लउकत रहे जे उहाँ गाँजा-भाँग जइसन कवनो निसइला पदारथ के लाग ना रहे ।

उहाँ अगर चरचा होखे त भगवान के, धनवान के ना; शुद्धता के बात चले त मन के, खाली तन के ना; दोष देखल जाय त सिर्फ अपना में, दोसरा में ना, दबावे के बात चले त अपना भीतर का काम के, केहू के लिहल दाम के ना, उपाय बतावल जात रहे त आपन कइल पाप के दूर करे के, केहू के परताप दूर करे के ना ।

www.bhojpurisahityangan.com

जवान साधु का अइला से ओह गाँव-जवार में एगो साफ-सुथरा आ पवित्र वातावरण तइयार हो गइल रहे ।

अमावस का रात के करीब बारह बजे के समय । आसमान में करिया-करिया बादल उमड़त-घुमड़त रहे । यज्ञशाला का लगे केहू के सुसुकला के आवाज कान में पड़ते साधु के नीन टूट गइल । सामने कुछ दूर पर एगो नारी-आकृति बिजुली का चमक के साथ साधु का आँख में चमक गइल । एक बेर ऊ चारो ओर धेयान से देखले । ओह औरत के छोड़ के कहीं केहू देखाई ना पड़ल । बदरी से घिरल अमावस का आधा रात के बेरा एगो जवान साधु का सामने लक्ष्मी खानी रूपवती युवती विधाता के भेजल वरदान का रूप में खड़ा रहे ।

थोड़े देर खातिर साधु का मन में जन्म-जन्मान्तर के संचित वासना के बवंडर उठ के उनका ज्ञान के दीया बुता देबे के तइयार रहे । ऊ सोचे लगले-'हे मायापति, हमार परीक्षा लेबे खातिर रउआ जगदम्बा लक्ष्मी के/त नइखीं भेज देले । एह धरती पर हाड़-माँस के बनल नारी हमरा खातिर अब भोग्या नइखे रह गइल; बलुक पूज्या बिया।' .....फेर भीतर के छिपल दुर्भावना टोकलस-'अभी तप करे के सउँसे उमिर पड़ल बा। युवा साधु! साक्षात् उपस्थित उर्वशी नियर सुन्दरी के अपमान कइला के पश्चाताप में जिनगी भर जरत रहे के पड़ी । कम-से-कम एकरा मन के थाह त ले ल, जे एकर का कामना बा ।.....ना.....ना जइसन ना होई । नारी.....जगदम्बा आ लक्ष्मी के रूप ह । एकरा के दोसरा भाव से देखला के प्रायश्चित एह जनम में संभव नइखे ।-दृढ़ निश्चय के पतवार हाथ में आवते, मन का नाव के काबू में करते कामना का नदी के किनार लउके लागल ।

साधु मन पर विजय पा के आगे बढ़ले -''माई ! एह रात में तू कहाँ से आ गइलू? तहरा पर कवन संकट आइल बा जवना कारन तहरा एह अन्हरिया का अधरतिया में घर छोड़ के एह कुटी के तरफ आवे के जरूरत पड़ गइल ह ?''

''बाबा ! हमार मरद दारू पी के बारह बजे रात के गिरत-पड़त आवेला आ रोज बहुत मार मारेला । कबो-कबो मार खात-खात बेहोश हो जाइले । आज हम ओकरा घरे आवे का पहिले चाहतानी जे पोखरा में डूबके आपन जान दे दीं; बाकिर इहाँ अइला पर घरे छोड़ के आइल दूगो छोट-छोट बचवन पर ममता आ गइल ह । एही से इहाँ ठमक गइल बानी । हमरा बुझात नइखे जे हम का करीं ।''-ई कहके ऊ मेहरारू फेर सुसुके लागल ।

''नारायन ! नारायन !! आत्महत्या महापाप; देवी ! ई दुनिया दुख सहे खातिर बनावले बा । मोह-ममता का जाल में फँसल आदमी पंछी अइसन दुख उठा रहल बा; तबो जीयते बा । देखऽ, एक ओर तू पति का सतवला से मरे के तइयार भइलू, त लड़िकन के माया दोसरा ओर से घेर लिहलस । अगर तहरा पति के सुभाव बदल जाय, त तहरा उनको खातिर आंतने ममता हो जाई, जवन लड़िकन खातिर बाटे । जरूरत बा, गलत आदमी के ना छोड़ के ओकर गलत सुभाव छोड़ावल । हम तहरा के विश्वास

www.bhojpurisahityangan.com

दियावत बानी जे सबेरे तहरा पति के खोजवा के इहाँ बोलवाएब आ अपना उपदेश से उनका के सही राह पर ले आवे के प्रयास करब । हमरा पूरा भरोसा बा जे उनका में जरूर सुधार हो जाई । अगर उनका मालूम हो जाई जे तू घर से भाग गइल बाड़ू त आउर अनर्थ के संभावना बा । एह से तू अभी अपना घरे लवट जा । एही में तहार कल्यान बा ।''

साधु के बात सुन के युवती बाबा के गोड़ पर आपन आँचर रख के परनाम कइ आ घर की ओर लवट गइल ।

साधु के ओह बेरा से कुछ देर ले नीन ना लागल । उनका दिमाग के बवंडर शान्त हो गइल रहे आ मन निर्मल जल अइसन साफ लागे लागल रहे । ऊ जोर-जोर से गावे लगले -''कामादि दोष रहितं कुरु मानसं च ।''

धीरे-धीरे उनकर आँख लागे लागल आ उनका पहिले जइसन गाढ़ नीन लाग गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

रात बरसात के

''पारवती देवी ।''-'दुवार पर डाकिया चिल्लइलस ।

''हँ, अइलीं । '' कहके परबतिया झटकल घर से निकलते पूछलस-''मनीआडर ले आइल बानी का मंसी जी ?''

डाकिया हँस के जवाब दिहलस-''ना हो, मनीआडर त नइखीं ले आइल । आज चिट्ठीए ले आइल बानी । चिट्ठी में मनीआडर आवे का बारे में लिखल होई त उहो अइबे करी ।''

परबतिया का चेहरा पर हँसी दउड़ गइल । ऊ हड़बड़ा के कहलस-''मंसी जी, तनी चिट्ठी पढ़ के सुना दीं, का लिखले बाड़े ।''

डाकिया लिफाफा के मुँह फाड़ के चिट्ठी निकललस आ पढ़े लागल -

''सोसती सीरी लिखीं जगन का तरफ से परबतिया के आसिरबाद । आगे इहाँ के हाल -चाल ठीक बा । परबतिया का मालूम जे जब से आइल बानी तब से हमार मन नइखे लागत । गोपाल के तबीयत खराब के तोर चिट्ठी पढ़ के मन आउर उदास रहत बा । आज का डाक से सैंगो रुपैया भेज रहल बानी । मिलत चिट्ठी दीहे । बरसात आ गइल । छान्ह पर के खपड़ा-नरिया फेरवा लीहे । हो सके त कुछ हथफेर लिहल रुपैया लवटा दीहे । गोपाल पर धेयान रखीहे ।

हमरा तरफ से गोपाल के बहुत-बहुत प्यार । जादा सुभ ।

-जगन''

चिट्ठी पढ़ के डाकिया परबतिया का हाथ में थम्हा दिहलस । चिट्ठी थाम्हत परबातिया पूछलस-

''चिट्ठिए का साथे मनीआडरो चलल बा । ऊ नइखे आइल का ? बहुत तंगी में बानी । हाथ खाली हो गइल बा आवते .....।''

''इहो कहे के पड़ी ? आवते पहुँचा देब । केहू के रुपिये अइला पर नू हमनियों के दूगो पइसा के उमेद रहेला ।'' कह के डाकिया आगे बढ़ गइल । परबतिया हाथ के चिट्ठी घर का ताखा पर रख के गोपाल का लगे आके चुपचाप बइठ गइल ।

सावन के महीना । पाँच-सात दिन से लगातार बरखा होत रहे । परबतिया का घरे बिना चुवले एको हाथ जगह बाकी ना रहे । ओही घर में गोपाल दस दिन से बेमार पड़ल रहे । एकेगो लड़िका ! माई-बाप का आँख के तारा । परबतिया अपनो खाइल-पीयल भुला के रात-दिन बेटा का देख-भाल में लागल रहे । जबसे जगन के चिट्ठी आइल, तबसे ई उमेद हो गइल रहे जे रुपिया आई त गोपाल के पंथ-पानी,

www.bhojpurisahityangan.com

घर-दुवार के मरम्मती आ डाकदर-बैद के फीस देवे लायक हो जाई ।.....बाकिर पता ना, चिट्ठी जल्दी आ गइल आ, मनीआडर कहाँ अँटक गइल । आँख ना सटल । रह-रह के आसमान में बिजुली का कड़कड़ाहट से कान के परदा फाटे लागत रहे आ जोरदार बारिस से घर-आंगन में पानी छितरा जात रहे । बिजुली के जोरदार आवाज आ देह पर पानी चुवला से गोपाल चिहुँक के उठ जात रहे । परबतिया फेर ठोक के ओकरा के सुतावे के उपाय करे लागत रहे । गोपाल कबो भूख से बेचैन होके बिस्कुट माँगे त कबो देह पर पानी पड़ला से काँपे लागे । परबतिया का घरे एगो टुटही छाता घइल रहे, ओही के तान के लड़िका का देह पर कसहूँ आड़ के एगो मोट गुदरा ओढ़ा दिहलस आ कहलस-''बेटा, घेंकुरी मार के एह छाता का आड़ में सुत जा । गुदरा ओढ़ा देले बानी, अब जाड़ ना लागी ।''

गोपाल सुसुकत कहलस-''माई, भूखे नीन नइखे पड़त, कुछुवो खाये के दे ।''

''बाबू हमार, कइसहूँ रात भर आँख मूँद के सुतऽ । सबेर होते तहरा खातिर बिस्कुट ले आ देब ।''

पाँच बरिस के नासमझ लड़िका ! फूट-फूट के रोए लागल । एने, बुझात रहे जे ओह दिन जइसन बरखा कबो ना होई । लड़िका के रोवाई देख के परबतिया का आँख से ढर-ढर लोर ढरके लागल । दिल के बेबसी लोर बन के ओकरा आँख से बहत रहे। घर में लावन-लकड़ी आ अनाज कुछुवो ना रहे जवना से ऊ अपना खातिर खाना बना सके । चानी के जंवन एकाध थान गहना रहे तवन मोचन साह किहाँ पहिलहीं बन्हकी धके डाकदर के फीस देवे आ दवाई कीने में खर्च कर चुकल रहे । अब केहू उधार-पाइँच देवे के नांवें ना लेत रहे । खुद परबतिए भूखे अइँठात रहे । बेमार लड़िका के घर में अकेला छोड़ के ऊ कहीं मेहनत-मजूरी करे जा ना सकत रहे । बिना काम कइले गरीब आदमी के केहू एको मुट्ठी अनाज देवे के ना चाहे ।

धीरे-धीरे बरखा थम गइल । गुदरा का गरमी से गोपाल के नीन आ गइल । अब परबतिया के मन निचिन्त भइल । ऊ एगो पुरान लुग्गा के दोबर के ओढ़ लिहलस आ घेंकुरी मार के आँख मूँद के सुत गइल । थोड़े देर में ओकरो आँख लाग गइल । ऊ सपना देखे लागल-जगन के भेजल मनीआडर आ गइल बा । परबतिया ओह रुपिया से गोपाल खातिर डाकदर बोला के दवाई के इन्तजाम करतिया । गोपाल नीरोग होके कूदत-फानत आ बिस्कुट खात लड़िकन का साथे खेलत बा । ई देख के परबतिया का खुशी के ठेकाना नइखे ।.....ऊ दउड़ के गोपाल के अँकवारी में पकड़त बिया तबले 'माई-माई' के आवाज से ओकर नीन टूट गइल आ सपना के सोनहुला चदर फाट के तार-तार हो गइल । ऊ अकचका के पूछलस-''का ह बेटा ।''

गोपाल काँपत कहलस-''बहुत जोर से जाड़ लागत बा ।''

परबतिया ओकर देह टोवलस । ऊ जाड़े काँपत रहे । परबतिया गोपाल के अपना छाती से सटाके कहलस-''आँख मूँद के चुपचाप सुत जो बेटा, अब जाड़ ना लागी ।''

थोड़े देर में आसमान बादल से घिर आइल आ फेर झमाझम पानी बरसे लागल । गोपाल के आँख थोड़े देर में लाग गइल बाकिर परबतिया एके टके रात का अन्हरिया में ताकत रहे ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

भिखारिन के राजकुमार

जून महीना के दुपहरिया ! सूरूज अपना गरमी से धरती के जरावत रहले । लू चलला से चिरई-चुरूंग ले जहाँ-तहाँ फेड़न का छाँह में सुस्तात रहले ।

एगो भिखारिन ओही जराजरी घाम में भुंभुर में खाली गोड़े अपना पाँच बरीस का लड़िका के अंगुरी धरइले आ के बाबू निहालचन्द का दुआर पर बइठ के सुस्ताए लागल। लड़िका घाम में चलला से आ खइला बिना भूखे-पियासे बेचैन होके तिले-तिले अपना माई से कहे लागल-''। माई, बहुत भूख लागल बा ।''

ओकर माई जब कुछुओ जवाब ना दिहलस त ऊ फेर कहलस-''माई, बहुत पियासो लागल बा'' आ, कहके ठुनुके लागल ।

भिखारिन का लगे खियावे लायक कवनो चीज ना रहे, जवन बेटा के दे सके आ गरमइले खाली पानी पियावल ठीक ना रहे । जब लड़िका भूखे-पियासे आउर जोर से ठुनुके लागल त भिखारिन आवाज लगवलस-''ए मलिकाइन !''

''के हऽ?'' कहत घर का भीतर से लाजवंती निकल के बाहर अइली त देखली कि एगो मेहरारू मइल आ फाटल साड़ी में अपना दुबर-पातर देह के लाज कवनो तरे तोपले चुपचाप बइठल रहे, आ, ओकरा बगल में एगो लड़िका रोवाइन मुँह बनवले माई के कान्ह धइले एके टके उनका के देखत रहे । ओकरा देह पर एगो फटहीं गंजी आ चिप्पी लगवला का बादो जेने-तेने से फाटल पाएँट रहे, जवन गरीबी के कहानी चुपचाप कह जात रहे । लड़िका के चेहरा-मोहड़ा सुन्दर आ देखनउक रहे । बड़हन-बड़हन आँख, नोखगर नाक आ गरीबी के कवनो असर ना जनावे वाला फुलल-फुलल गोर गाल सहज रूप में अपना ओर खींच लेवेवाला रहे ।

गरीबी व्यवस्था के देन ह, बाकिर सुन्दरता ईश्वर के दीहल अइसन वरदान ह जवना के केहू दे ना सके त लेइयो ना सकेला । लाजवंती भिखारिन के मउरल मुँह देखली जवना पर पीड़ा के रेघारी साफ-साफ लउकत रहे। फेर ओकरा से सटल लड़िका पर धेयान गइल जवना के दूनू लाल गाल पर लोर के चिन्हासी चमक जात रहे । लाजवंती

www.bhojpurisahityangan.com

पूछली-''का ह ?''

भिखारिन मुँह बनवले धीरे से कहलस-''मलिकाइन, हमार लड़िका बहुत भुखाइल बा, कुछ खाये के दे दीं, बहुत पुन्न होई ।''

लड़िको निरीह भाव से लाजवंती का ओर एके टके ताकत रहे । ओकरा के देख के लाजवंती के दया आ गइल । ऊ घर का भीतर जा के गेहूँ के चार गो रोटी पर सब्जी रख के ले अइली आ भिखारिन का हाथ में देत कहली-''हई लऽ, लड़िका के खिया दऽ आ अपनहूँ खा लऽ ।''

''भगवान रउरो धन-वंश के बढ़ंती करस ।'' कहके भिखारिन अपना हाथ में चारो रोटी लेके लड़िका के खियावे लागल । रोटी देखते लड़िका का आँख में एगो अजबे चमक आ गइल रहे । बुझात रहे जइसे ओकरा मरूआइल चेहरा पर हँसी हिलकार मारे लागल ।

लाजवंती भिखारिन से कुछ अलगे ठाढ़ रहली । ऊ कुछ जाने के खियाल से पूछली-''तहरा लड़िका के का नाँव ह ?''

''राजकुमार ।''

''नाँव त बड़ा नीक बा हो, आ देखहूँ में बड़ा नीमन लागत बा ।''

''का नीमन लागी मलिकाइन, टूअर बेटा ह । एकरा जनमते बाप सरंग सिधार गइले। जब ई गरभ में रहे तबे ऊ कहले रहस कि बेटा होई त 'राजकुमार' नाँव रखाई आ बेटी होई त 'राजकुमारी' । बेटा भइल राजकुमार, बाकिर जनम के दुखिया आ करम के हीन ।''

लाजवंती कुछ देर खातिर अपना में खो गइली । उनकर उमर पैंतालीस-पचास के बीच के रहे । धन-दउलत के कवनो कमी ना रहे । सुन्दर-समझदार पति, आलीशान मकान आ ओमे सुख-सुविधा के समूचा सामान । पति के प्यारो उनका भरपूर मिलल। तबो अबले कवनो संतान ना भइला से ऊ बराबर उदास रहत रहली । उनका जवानी का बसंत में सुख के फूल त बहुत खिलल बाकिर एको फल ना लगला से सउँसे जिनगी पतझड़ अइसन उदास-उदास लागत रहे । उनकर पति निहालचंद बराबर समुझावस बुझावस तबो उनका हृदय के समुन्दर में उठत संतान के तूफान कसहूँ थथमे के नाँव ना लेत रहे । आज फेर उनका दिल में तरह-तरह का कल्पना के बवंडर उठे लागल रहे-''हाय रे बिधना ! भिखारिन के लड़िका राजकुमार ! नाँव से राजकुमार आ भाग्य से भिखार । काश ! अगर ई हमार लड़िका रहित त सचहूँ, राजकुमार रहित । राजसी ठाट-बाट में आराम-सुख के जिनगी जीयत एकरा के देख के हमार हिया हुलस जाइत। आज एकरा रोटी के एगो टुकड़ा खातिर नानू तरसे के पड़ित । सचहूँ, भगवान कबो-कबो कीमती हीरा के कुजगहा फेंक देलें, जवन माटी का ढेर में दबल-दबल बेकार हो जाला ।''

भिखारिन तीन गो रोटी अपना भुखाइल बेटा के खिया के एगो अपने खइलस आ कवनो दोसरा दुनिया में भुलाइल लाजवंती के टोकलस-''मलिकाइन, हमरा कटोरा में

www.bhojpurisahityangan.com

थोड़े पानी डाल दीं, लड़िका बहुते पियासल बा ।''

लाजवंती घर से भर लोटा पानी ले आ के ओकरा कटोरा में उझिल दिहली । एक कटोरा पानी बहुत देर से पियासल लड़िके के पीयत देखके ऊ फेर एक लोटा पानी ले आके कटोरा में उझिल दिहली । अब दूनू खा-पी के संतुष्ट हो गइले । राजकुमार के मउरल चेहरा पर हँसी के हरियरी झलके लागल रहे आ भिखारिनो मने-मन लाजवंती के एह दयालुता पर असीसत रहे । भिखारिन अब जाये के तइयार होत राजकुमार से कहलस-''चल बेटा, चले के ।'' आ ऊ उठे लागल तले लाजवंती कहली -''तनी आउर सुस्ता लऽ । अबो बहुत घाम बा ।''

भिखारिन अब इत्मिनान से बइठ गइल रहे । लाजवंती राजकुमार में अपना कल्पना के बेटा राजकुमार के खोजत जब-तब ओकरा ओर ताक के फेर भिखारिन से कुछ-कुछ बतियावे लागत रहली ।

भिखारिन अभी बइठले रहे तबले निहालचंद कहीं से स्कूटर से आके कुर्सी पर बइठ गइले । ऊ मइल आ फटही कपड़ा पहिनले भिखारिन आ ओकरा बेटा के देख के लाजवंती से कहले-''कुछ खाये के दे दऽ, चल जा स । बेकार के काहे के बइठवले बाड़ू ?''

लाजवंती जवाब दिहली-''खाये के दे देले बानी । बहुत घाम रहल ह एही से..।''

''त का दिन भर रहे खातिर इहे जगह बा? कहीं गाछी तर बइठेला, उहाँ हवो लागी।'' निहालचंद बात काट के कहले ।

''लड़िकावा के देखीं ना कतना नीक लागत बा ।'' लाजवंती अपना पति से कहली।

''तहरा त कइसनो लड़िका नीके लागेला, चाहे ऊ भिखारिने के काहे ना होखे ।'' कहके निहालचंद लड़िका का ओर मुँह क के ओकरा से पूछले -''तोरि का नाँव ह रे?''

लड़िका डेराइले धीरे से जवाब दिहलस-''राजकुमार ।''

निहालचंद मुँह बिजुका के मुस्कात कहले-''हँ त राजकुमार ना रहिते त भीखे माँगिते । आँख के अंधा नाम नयनसुख । हा.....हा.....हा.....।''

लाजवंती उदास होके कहली-''रउआ हरदम हँसिये सूझेला । हमरा काहे दो एकरा के देख के नेह उमड़े लागत बा । अगर इहें नीक तरे खाये-पीये आ नीमन बस्तर पहिरे त का राजकुमार से कम लागी ?''

निहालचंद डपट के कहले-''एकनी के बइठाके बेमतलब के दिमाग खराब कइले बाड़ू ।''

भिखारिन निहालचंद के रूखर बतकही सुन के उठल आ अपना लड़िका का साथे जरत घाम में चल दिहलस ।

लाजवंती झिलमिलात लोर वाला आँख से भुंभुर में खाली गोड़े भिखारिन का पीछे-पीछे जात ओकरा राजकुमार के एकटक निहारत रहली ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

सोना के परख

सोना सोने रहली । बिधाता जइसे आपन समूचा अकिल आ अनुभव उनके के बनावे में लगा दिहले रहले । उनका सुन्दरता का सामने इन्नर के परी पानी भरे लागत रहली । जेने चलस तेने लोगन के आँख उनका तरफ टँगा जात रहे । उनका चलला में हंस के चाल फीका लागत रहे आ हँसत चेहरा देख के पूनम का चान के भान हो जात रहे । उनकर मुस्कुराहट फूल बिखेरत रहे आ बोली से मधु टपकत रहे ।

सोना एगो पढ़ल-लिखल किसान के बेटी रहली । उनकर बाप उमानाथ के सहारा खेतिये रहे । ऊं रहले बहुत समझदार आ मेहनती बाकिर बाहर के कवनो दोसर आमदनी ना रहला से सभ काम खेतिये के आमदनी से करे के पड़त रहे । उनका तीन गो लड़की सोना, सीता आ गीता रहली । सभ से छोट लड़िका मनोज पाँच बरिस के रहे ।

घर के बड़की लड़की भइला का नाते सोना के सभसे अधिका नेह-दुलार मिलल। नाम मोताबिक गुनो उनका में कम ना रहे । सीता, गीता आ मनोज के देखभाल करत ऊ अपनहूँ पढ़े-लिखे में लागल रहत रहली । गाँव का स्कूल से मैट्रिक के इम्तहान फर्स्ट डिवीजन से पास क के प्राइवेट से इन्टरो क लिहली आ धीरे-धीरे बी. ए. के तइयारी करे लगली । हिन्दी से पहिलहीं से लगाव रहे एह से पढ़े का तरफ उनकर झुकाव आउर सजोर होते गइल । साहित्य त खुदे अपना ओर खींचेला । ओकरे रस से पढ़निहार के मन रसगर बनल रहेला । सोना साहित्य के स्वाद जान लेले रहली । एही से उनका हाथ में बरोबर कवनो ना कवनो किताब देखल जात रहे । उमानाथ ना चहलो पर बेटी में पढ़े के लगन देख के उनका कहला मोताबिक किताब-कॉपी खरीद देस आ साथे जा के इम्तहान दिया आवस । ऊ बी. ए. क गइली ।

देखत-देखत सोना के उमिर बीस-बाइस बरिस के हो चलल । अबहीं ले उनकर बियाह कहीं तय ना भइला से उमानाथ का मन में चिन्ता बढ़े लागल । कबो-कबो त एह बात के लेके उनका अपना मेहरारू माया का साथे कहासुनी के नौबत आ जात रहे। ऊ जब कबो उमानाथ के निचिन्त देखस त कह पड़स-''रउआ काहे हाथ पर हाथ रख के बइठल बानी, सोना के बियाह कब करब ? अब त तीनू सेयान भइली स । पारा-पारी

www.bhojpurisahityangan.com

भार उतरले से. नू उतरी ?''

उमानाथ का जवाब देस ? उनका सोझा जइसे पहाड़ ठाढ़ हो गइल होखे, जवन टरले टराये वाला ना रहे, तबो कसहूँ टपहीं के रहे । ऊ अपना हित-नात के साथे लेके लड़िका वालन का दुवारे-दुवारे चक्कर काटे लगले । लड़िकन का बाजार में उतरला पर बाजारभाव सुन के उनकर माथा ठनके लागल । ऊ घरे आके माया का लगे कपार पकड़ के बइठ गइले आ कहे लगले-''कवनो लड़िका वाला के दुवार पर गइला पर बुझाता कि हम अपना पढ़ल-लिखल आ लछिमी जइसन लड़की के केहू का हाथ में देवे के प्रस्ताव लेके नइखीं आइल, बलुक पचास-साठ हजार में केहू के लड़िका खरीदे आइल बानी । लड़िका पसन्द पड़े का पहिले लड़िका वाला लड़की वाला के थाहे लागत बा कि एकरा लगे कतना देवे के अवकात बा । अगर लड़कीवाला ठाट-बाट आ देब-लेब में कमजोर बुझाता त लड़िका वाला सोझ मुँह से बातो नइखे करे के चाहत । एगो त मन मोताबिक सभ कुछ एक जगह लउकते नइखे। कहीं मन धरतो बा त तिलक-दहेज के बतकही सुन के कपार में आग लाग जात बा । जवन होखे तवन तिलक-दहेज का नाम पर पहिलहीं पाई-पाई गिना दीं आ दुवार पर बारात अइला पर स्वागत में घर के अन्न-धन खंखोर के खाली कर दीं; एकरा बाद लड़िका के मुँह सोझ करे खातिर टी. वी. आ स्कूटर जवन माँगे तवन दीं । ई भला संभव बा ?''

एतना कहत-कहत उनका आँखिन से लोर के दूगो बूँद ढरक गइल ।

उमानाथ के लोर पोंछत देखके माया समुझावत कहलीं-''रउआ अतना घबड़ाएब त कइसे काम चली ? जबाना में आग लाग गइल बा त सभका जरहीं के बा। लोगन के दिमाग सड़ गइल बा । बुझाता जइसे बेटिये वाला का बेटी के बियाह करे के गरज पड़ल बा, बेटा वाला का बेटा के बियाह करे के गरजे नइखे । बेटी कवनो घर के बहारन ना होले जे कहीं फेंक दिहल जाव । हमनी त एकनी के पढ़ा-लिखा के सभ तरह से जोग बना देले बानी । एकनी के बियाह तबे होई जब विचार वाला लड़िका मिली. जवन हमनियों के हित सोचे वाला होई । चिन्ता फिकिर छोड़ीं, मुँह-हाथ धोईं । खाना तइयार बा ।''

उमानाथ का बुझाइल जइसे उनकर देह अकड़ गइल होखे । कसहूँ उठके मुँह-हाथ धो के खाये बइठ गइले, तबो उनका दिमाग का आसमान में चिन्ता के करिया घटा उमड़त-घुमड़त रहे ।

× × ×

अपना बियाह का बारे में माई आ बाबूजी के बतकही सुनके सोना का सभ बात मालूम हो गइल रहे । एह बारे में ऊ रात में बिछावन पर जागल-जागल सोचे लगली-''दहेज के दानव पता ना केतने लड़कियन के चबा गइल आ अबहूँ सुरसा खानी मुँह बवले जाता ।.....एकरा खातिर खास क के लड़कियन के आगे आवे के पड़ी। ऊ नागिन खानी फुँफकार उठली-''अब अत्याचार बरदास्त ना कइल जा सकी । एकरा खातिर चाहे कतनो तकलीफ सहे के पड़े भा समाज के मरजाद तूरे के पड़े त का ह,

www.bhojpurisahityangan.com

सभ मंजूर बा ।''

इहे सोचत पता ना सोना का कवनीन पड़ गइल । सबेरे उठ के ऊ माया से कहली-''माई, बाबूजी से बियाह का बारे में हमरा कछु बतियावे के बा ।''

सोना के बात सुन के माया के माथा ठनकल । सोचे लगली-''हे भगवान, लड़की बियाह का बारे में का बात करी ? एगो हमनी के जबाना रहे कि अपना बियाह के बतकही चले लागे त लाजे दोसरा का घरे भाग जाईं जा ।'' फेर कहली-''अच्छा जब कहत बाड़ू त हम उहाँ के अंगने में बोला देत बानी ।''

माया दुवार पर जाके देखली उमानाथ अपना पड़ोस के भाई जदुनाथ से बतियावत रहले । माया उमानाथ से कहली-''सोना रउआ से कुछ कहे के चाहत बिया ।''

उमानाथ जवाब दिहले -''एही जा भेज द । केहू दोसर थोड़े बा ?''

माया सोना के दुवार पर बोला दिहली । सोना आके चुपचाप ठाढ़ हो गइली ।

उमानाथ पूछले -''का बात कहे के बा बेटा ?''

सोना बिना कवनो संकोच कहली-''बाबूजी हमार बियाह ओही परिवार में होई जवना में तिलक-दहेज ना लियात होई ।''

''अइसन परिवार कहाँ मिली बेटा ? जे जेतने सम्पन्न बा, ओकर ओतने अधिक माँग बा ।'' उमानाथ लमहर साँस खींचत कहले ।

''हमरा खातिर धन से ना बलुक मन आ विचार से सम्पन्न खोजे के पड़ी । रउआ एकर चिन्ता छोड़ दीं कि अइसन आदमी ना मिलिहें । दुनिया बहुत बड़हन बा बाबूजी।''

बाप-बेटी के बतकही सुन के जदुनाथ बीचे में बोलते-''सोना ठीक कहत बिया । आखिर पढ़ल-लिखल लड़की में जादा समझदारी त होइबे करी । भइया, पहिलका जबाना में गरीब लोग लड़िका वाला से रुपया लेके अपना लड़की के बियाह करत रहे त लोग उनका के 'बेटी-बेचवा' कहत रहे, बाकिर अब त सभ लड़िका वाला लड़की वालन से मनमाना रुपया अइँठ के अपना लड़िका के बियाह करत बाड़े त उनका के 'बेटा-बेचवा' काहे ना कहल जाव ।''

उमानाथ के चेहरा पर हँसी खेल गइल । ऊ माया का ओर ताक के कहले-''जदुनाथ ठीक कहत बाड़े ।''

सोना आपन अन्तिम फैसला सुना दिहली -

''बाबूजी कवनो कीमत पर हमार बियाह 'बेटा बेचवा' किहाँ ना होई ।''

उमानाथ का मुँह से हठात् निकलल-''वाह बेटी ?''

माया मुस्का के कहली -''हमार सोना ओही घरे जइहें जहाँ सोना के परखे वाला लोग होइहें ।''

उमानाथ संतोष के साँस लेत कहले-''अब हमरो विश्वास होता कि हमरा सोना के पारखी एह लमहर दुनिया में केहू ना केहू जरूर मिली ।''

●

www.bhojpurisahityangan.com

तिकोन

चिरंजीवी मनमोहन उजियार

आशीर्वाद । 29.7.86

आगे हमार समाचार नीके बा, तहार नीक रहो एकरा खातिर ठाकुर जी से मनावत बानी । बबुआ का मालूम कि कुछ मजबूरी के कारन एह साल तहार बियाह कर देबे के पड़ल ह, ना त तहरा जइसन पढ़निहार लड़िका के अभी एह जाल में फँसावे के ना चाहत रहलीं हँ । तू अपना दिमाग से निकाल दीह कि तहार बियाह भइल बा आ घरे तहार केहू (मेहरारू) बा; काहे कि एके साथे दूनू सोचला पर तहार पढ़ाई पर बहुत खराब असर पड़ी । तू खुदे जानत बाड़ कि बेकारी के एह जबाना में कमजोर पढ़निहार के कहीं गुजारा नइखे । रात-दिन मेहनत करे के चाहीं कि रिजल्ट नीमन होखे । एही से घर-परिवार के इज्जत बढ़ी ।

एगो बात आउर कहे के बा । तू अपना ससुरार वाला टू-इन-वन लेले गइल बाड़ त ठीक बा तहरे खातिर मिलल बा बाकिर हमार निहोरा बा कि कबो समाचार सुने के होखे त रेडियो खोल के आ सुन के फेर बंद कर दीह । अगर 'टेप' बजावहीं के होखे त भजने भा रामायन के कैसेट कबो-कबो बजइह । फिल्मी गीत सुनला से दिमाग खराब होला आ बुद्धि भरभट्ठ । साथ ही लोफर लड़िकन के संघत भुलाइयो के मत करीह। शहर के लड़िका बड़ा चालू होले । कबो सिनेमा आ कबो चायखाना से लेके शराबखाना आ वेश्याखाना ले पहुँचा देले। हमरा पक्का विश्वास बा कि तू हमार पगड़ी झुके ना देबऽ।

बबुआ का मालूम कि दुलहिन खुशी-राजी से बाड़ी । इनका कवनो तरह के दिक्कत नइखे । जानते बाड़ तहार माई सीधा सुभाव के हई । कहत बाड़ी कि हमार पतोह गउ आ गइल । कबो एक ओठ से दू ओठ ना करे । बड़ा भाग से अइसन पतोह केहू का घरे आवेले ।

ज्यादा का लिखीं । अन्त में फेर कहतानी कि मन लगा के पढ़ी ह ।

तहार बाबूजी

अमरनाथ

उजियार

पूजनीय प्राननाथ, 8.8.86

रोज-रोज के परनाम पहुँचे ।

हमार हालचाल ठीके बा । राउर हालचाल जाने खातिर मन बेचैन रहत बा । रउआ जब से गइलीं तब से एको चिट्ठी ना भेजलीं । मालूम ना, हमरा से कवन खसूर हो गइल

www.bhojpurisahityangan.com

बा कि रउआ घर से जाते-जाते बिसार दिहलीं । डकपिउन के आवं के बेरा हमार कान, दुवारे का ओर लागल रहेला । जब फुरसत मिलेला, पलंग पर खड़ा होके जंगला मुँहे राउर राह जोहत रहीले, बाकिर रउआ अइसन निरदयी बानी कि एको दिन खातिर आवे के नाँव नइखीं लेत । बुझाता कि एह घर में जइसे राउर केहू हइए नइखे।

बुझाता कि हमरा भाग में खाली दुखे लिखल बा । अम्माजी के रोज-रोज के डाँट-फटकार सुन के हमरा बहुत तकलीफ होता । अपना घरे हमरा कवनो काम ना करे के पड़ल आ इहाँ काम का मारे एको मिनट के फुरसत नइखे मिलत । दूनू बेरा चुल्हा फूँकत-फूँकत धुआँ लगला से आँख आ कपार में दरद होखे लागता । कवन अइसन दिन बा जहिया हमरा दू धार लोर नइखे गिरावे के पड़त । अभी ले हम मुँह बन्द क के सहत जा रहल बानी । बाकिर कब मुँह खुल जाई, के जान ता । एकरा से अच्छा बा कि हमरा नइहर से बिदाई खातिर कवनो दिन आवे त ओह दिन के हमार बिदाई हो जाव ।

दिलके आउर बात हम चिट्ठी में का लिखीं । का जाने दोसरा केहू का हाथ में ई चिट्ठी पड़ जाई त ठीक ना होई । एह से दिल के बात दिले में रहे त अच्छा बा, आ रउआ जइसन आदमी खातिर दिल के बात के कीमते का बा ।

राउर
अभागिन चम्पा

सीवान
20.8.86

हमरा मन-मन्दिर के रानी,
मधुर प्यार ।

तहार चिट्ठी जब से मिलल बा, तबसे हमार मन पागल जइसन हो गइल बा । तहार तकलीफ जान के हम रात भर सुतल नइखीं । हमरा विश्वास ना रहल ह कि जवन माई हमरा ना चहलो पर जोर लगा के हमार बियाह करवलस, उहे आज तहरा के तकलीफ देवे में कवनो कोर-कसर नइखे उठा रखत । हमनी के दुर्भाग बा कि हम नोकरी नइखीं करत नां त ई नौबत आवहीं ना देतीं । खैर, घबड़ाये के बात नइखे । दिल के काँच ना करे के चाहीं । जबले हम अपना पैर पर खड़ा नइखीं हो जात तबले तहरा घरे कम-बेस तकलीफ होइबे करी । हमरा अपना बाबूजी का लगे तहरा बिदाई का बारे में चिट्ठी लिखे में लाज बुझाता । अच्छा होई कि तू ही अपना बाबूजी के बेमारी के बहाने बोला के दिन धेरवा के चल जा । एसे फायदा ई होई कि हमहूँ जल्दी-जल्दी ससुरारी आवत जात रहब आ माई-बाबू जी का पता ना चली ।

तू बुझत बाड़ू कि हम तहरा बारे में कुछ सोचते नइखीं । हम ईमान से कहतानी कि तहरा इयाद में एह घरी हमार मन पढ़े-लिखे में एकदम नइखे लागत । अगर ससुरार से 'टू-इन-वन' ना मिलल रहित त हम अबले पगला गइल रहतीं । ओहू में तहार गावल गीत के टेप जब खोल दीले त तहरा कोइल कंठ के मोहक मिठास से मन के मोर नाच उठेला । कबो-कबो मन जादा उचट जाला त सर-सिनेमा से मन बहलावे के पड़ेला । बाबूजी चिट्ठी में खाली पढ़े के बात लिखतानी, बाकिर हम दिल के बात तहरा के छोड़ के दोसर केकरा से कहीं । पढ़त में बियाह हो गइला पर पढ़निहार पर का गुजरेला से भुक्तभोगिए बूझेला ।

जादा का लिखीं । चिट्ठी के जवाब लौटती डाक से जरूर भेजीह ।

तहरा मोहब्बत का पकड़जाल में
अझुरा के छटपटात
मनमोहन

www.bhojpurisahityangan.com

संकल्प

पलानी में बान्हल बैलन के कान पटपटावत सुनके तपेसर के आँख खुलल । ऊ बाहर निकल के तकले त आसमान में करिया बादर छवले रहे आ बूना-बूनी पड़त रहे। अभी सबेर होखे में तनी देर रहे बाकिर नींन टूट गइला पर फेर महटिया के सुतल ठीक ना जान के बैलन के नाद तर बान्ह के लोटा उठवले आ गाँव के पच्छिम फराकित होखे चल दिहले ।

अइसे त तपेसर के गाँव कवनो छोटमोट दू-चार टोला वाला ना ह, बलुक एगो आठ-दस हजार के आबादी वाला कसबा ह, जहाँ-डाकघर, बैंक आ रोज लागे वाला बाजार बा । गाँव में बिजुली के खाली खम्भे नइखे गड़ल, कबो-कबो बिजुली के अँजोरो लउक जाला । एह गाँव के शहर से जोड़ेवाली पक्की सड़को पनरह-बीस बरिस से बनल बा, बाकिर बनला के बाद से कबो ओकर मरम्मतो फेर दोबारा ना भइल । गाँव के लोग कहेला कि एकरा से ठीक त कच्चिए सड़क रहे । साइकिल सवार लोग त सड़क के बगल वाली पगडंडी ध के निकल जाले बाकिर जीप-टैक्सी पर चढ़ल लोग ठेहुना भर गहिर सड़क पर हिचकोला खात मनेमन हनुमानजी के गोहरावत अपना घरे पहुँचेले ।

तपेसर अइसे त अपना जवाना के पँचवे ले पढ़ल हउवन बाकिर साठ बरिस के उमिर ले जिनगी के बहुत उतार चढ़ाव देखत आइल बाड़े । ऊ उहो जबाना देखले बाड़े जब ई मुलुक अंगरेजन के हाथ गुलाम रहे आ आज आजादी के पचास बरिस पूरा भइला पर मनावे जाये वाला समारोह के धूमोधाम देख रहल बाड़े ।

ओह दिन तपेसर पच्छिम का ओर के आपन खेत-बधार घूमत आके दुआर पर के चउकी पर बइठले रहले तले गाँवहीं के एगो नवजवान जग्गू आके उनका लगे बइठत पूछले -''तपेसर काका, का हालचाल बा ?''

तपेसर खइनी खोंट के चुना मिलावत कहले -''हमार हालचाल का पूछले बाड़ बबुआ, जइसन पहिले रहे तइसने आजो बा ।''

जग्गू का तपेसर से कुछ अनुभव के बात सुने के मन होला त अइसही हालचाल जाने खातिर उनका दुआर पर आ जाले आ खोद-खोद के काम लाएक बहुते बात उगिलवा लेले । ओह दिन कुछ कहवावे के मन बना के चलल रहले जग्गू । एह से

www.bhojpurisahityangan.com

तपेसर से फेर पूछ दिहले -''काका, अइसे काहे कहत बाड़ ? तूँ त आजादी का पहिलहूँ के भारत देखले बाड़ आ आजादी का पचास बरिस का बादो के देख रहल बाड़ । एह पचास बरिस में आपन मुलुक कतना तरक्की क गइल, देश-दुनिया में रोजे नया-नया बदलाव आवत बा आ तहार हाल जइसन पहिले रहे ओइसही आजो बा, ई बात हमरा समझ में नइखे आवत ।''

तपेसर बायाँ तरहत्थी पर के बनावल खइनी दहिना हाथ के चिटुकी से उठाके ओठ में दबवले आ जग्गू का ओर देख के कहले-''बबुआ, हम कहाँ कहत बानी कि पचास बरिस में कवनो बदलाव नइखे आइल । बदलाव त अइसन आइल बाटे कि का नइखे बदल गइल । बाकिर जवना बदलाव खातिर महात्मा गाँधी जी गाँवे-गाँवे घूम के आजादी के अलख जगवले, नवहिन के अंगरेजन के खोलल इस्कूल-कवलेज में से पढ़ाई छोड़ा के देश-सेवा खातिर प्रतिज्ञा करवले, जवना आजादी खातिर तिलक,गोखले, सुभाष, जवाहर, पटेल, राजिन्दर, मौलाना आजाद जइसन केतने नेता आपन सुख-चैन भुला के क्रान्ति के आग में कूद पड़ले आ भगत, आजाद, बिस्मिल जइसन बहादुर जवान देश खातिर अपना के कुर्बान कर दिहले, ऊ बदलाव ना आइल । का एह त्याग आ बलिदान से जवन आजादी मिलल तवना के फल हर आदमी तक पहुँच सकल ? का ई बात सही नइखे कि आजादी का फेड़ के फल कुछ खास लोग खा रहल बा आ गरीब जनता आजो खाये वालन का ओर आस लगवले ताक रहल बिया ।'' तपेसर बोलत-बोलत काँपे लगले आ ओठ में दबावल खइनी जीभ से बटोरत 'पच्च' से थूक दिहले ।

जग्गू तपेसर का बात पर अखियान कइले त बूझे में देर ना लागल कि ओह पुरनका नजर का सोझा देश के जवन तस्वीर लउकत बा ऊ गाँधी जी का सपना वाला भारत के तस्वीर ना ह । ऊ तपेसर से कहले -''काका, गाँधी बाबा अगर कुछ बरिस आउर रह गइल रहिते आ देश के अइसन हालत देखिते त उनको तहरे अइसन नू दुख होइत।''

''बबुआ, गाँधी जी के त्याग-तपस्या के पुरस्कार त उनकर जान लेके दियाइए गइल। ऊ एही खातिर नू बाउर रहले कि हिन्दू-मुसलमान के एक नजर से देखत रहले। ऊ त इहो ना चाहत रहले कि भारत माता के दू दुकड़ा में बाँट दिहल जाव । बाकिर उहे भइल जवन ना होखे के चाहत रहे आ आजो उहे हो रहल बा जवन ना होखे के चाहीं ।'' तपेसर कह के बैलन का ओर देखे लगले ।

''का ना होखे के चाहीं, काका ?'' जग्गू जाने के खियाल से तपेसर से पूछले ।

''बबुआ, सुनहीं के चाहत बाड़ त सुन ।'' कह के तपेसर आगे कुछ कहहीं के चाहत रहले तले जग्गू के संघतिया धीरू उहाँ आवते टोकले-

''का सुनावत बाड़ तपेसर काका, तनी हमहूँ सुन सकीले ?'' -धीरू चउकी पर बइठत फेर कहले-''तनी सुनाव ना काका, का सुनावत रहल ह ।''

''बबुआ, तूँ लोग पढ़ल-लिखल बाड़ । देश-दुनिया के बात हमरा से ज्यादा तहरा लोगन के बुझात होई ।'-तपेसर कहले ।

''बुझाते नइखे, बुझइला पर खीस के मारे देह के खून खउले लागत बा । जेने देखीं

www.bhojpurisahityangan.com

तेने चोरी आ घुसखोरी से नाके दम हो गइल बा । काल्हे ब्लॉक से एगो आय प्रमाणपत्र बनवावे गइलीं त किरानी बीस रुपया माँगत रहे । जब हम पइसा ना देवे के आपन मजबूरी देखवलीं त ऊ लागल रोब गाँठे, बाकिर जइसहीं हम ओकर कालर पकड़ के मारे के चहलीं तले लोग आके छोड़ा दिहल आ किरानी त डरे काँपे लागल रहे । फेर त देखते देखत हमार आय प्रमाणपत्र बनाके आ साहेब से दस्तखत करा के दे दिहलस । हमरा बुझा गइल कि आज आपन अधिकारो सीधे नइखे मिल सकत ।''

जग्गू धीरू के बात सुन के अपना पर घटल एगो घटना सुनावे लगले -''धीरू भाई, हम एक दिन कार्ड आ गैलन लेले किरासन तेल खातिर डीलर का लगे पहुँचलीं त लमहर लाइन लागल रहे । हमहूँ जाके लाइन में लाग गइलीं । अभी अधे लोग के तेल मिलल रहे तले ऊ खाली ड्राम देखा दिहलस जे तेल खतम हो गइल । अब दोसरा दिने तेल आई त मिली । गाँव के सीधा-सादा मजदूर-किसान मुँह बनवले हाथ में कार्ड-गैलन लेले लवट गइले । हमरा दाल में काला बुझा गइल । भीड़ छटला पर पाँच मिनट के बाद हम डीलर से कहलीं -'तनी कागज देखे के चाहत बानी कि अबकी बेर कतना लीटर तेल उठवले बाड़ आ कतना लीटर बँटले बाड़ ।'-एतना बात सुनते डीलर अचरज से हमरा ओर तकलस आ कहलस-'ओह, रउरो तेल ना मिलल ? हमरा से कहे के नू चाहत रहल ह । क लीटर के जरूरत बा ?' डीलर के बात सुन के हमरा कपार में आग लाग गइल । तनी टेढ़ होके बोललीं -'हमरा के त डरे तेल देबे के तइयार हो गइल कि ना दिहला पर बात आगे बढ़ जाई, बाकिर ओह गरीबन के का होई जे तहरा बात पर विश्वास क के लवट गइले ?' हमार बात सुन के ओकर बोलती बन्द हो गइल। ओकरा के चुपाइल देखके कहलीं-'हम तबे तेल लेब जब सभकर हिस्सा बँटाई ।''

धीरू के बात सुन के तपसेर के आँख में एगो अजबे चमक आ गइल । ऊ कहले-'वाह बबुआ धीरू, तूँ त हमरा मन के लायेक
अगर तूँ लोगन अइसही धेयान राखल कर त गाँव के गरीबन पर होखे वाला अतियाचार बन्द हो जाई ।''

जग्गू तपेसर से कहले -'काका, आजु-काल्ह जतना चोरी-घुसखोरी चलत बा ओमे खाली किरानिये आ डीलरन के हाथ नइखे । ऊपर के साहबो-सूबा मिलजुल के खात बाड़े । नाहीं त अइसन अन्हेर ना होइत ।''

तपेसर हुँकारी भरत कहले -''ऑफिस में बिना घूस के काम नइखे होत, ईमानदारी से कोटा के तेल -चीनी नइखे बँटात, पक्की सड़क आगे-आगे बनत जाता आ पीछे से चिप्स उधियात जाता - एकरा पीछे भ्रष्ट अफसर, इंजीनियर आ ठेकेदारन के हाथ त बड़ले बा बाकिर ओह लोगन के ऊपरो केहू के लमहर हाथ बा जे सभका के बचा रहल बा । एह तरे नीचे से ऊपर ले सभे मिल के जनता के धन लूट-खसोट के आपन तिजोरी भर लेत बा आ आम आदमी आपन कपार ठोंक के भाग्य का भरोसे रह जात बा । कहे खातिर त हमनिये के चुनल लोग सरकार बनावत बा, बाकिर उहो लोग ऊपर जाके हमनी के दुख-दरद पर खियाल नइखे करत ।''

www.bhojpurisahityangan.com

जग्गू तपेसर के बात पर मुसकाये लगले आ कहले-''काका, काहे अपने चुन के भंजल लोग अपनन के दगा दे रहल बा, एकर कारनो छिपल बा ?''

धीरू कहले -''हमनी प्रतिनिधि चुने के तरीके गलत रखले बानी त ओकर नतीजा सही कइसे होई ? आजे से ना, जबसे आजादी मिलल तबे से हमनी कबो धरम के नाँव पर, कबो जात के नाँव पर, त कबो भाषा के नाँव पर अपना के बाँटके देखत बानी । एही से नाजाइज फायदा उठावे वाला हर नेता हमनी के एही फंदा में फँसा के आपन उल्लू सीधा कर लेत बाड़े । जबले हमनी एह सभ से ऊपर उठ के समाज, राज्य आ देश के तरक्की का बारे में ना सोचब तले जनता के भलाई ना होई ।''

जग्गू के बात तपेसर के नीक बुझाइल । ऊ कहले-''गलती के नेंव त आजादी के मिलते पड़ गइल । एके सुधारे के चरचो चारो ओर चल रहल बा, बाकिर मोका अइला पर सभे ओही धार में बहे लागत बा । तूँ लोग एह पीढ़ी के नवजवान आ आवे वाली पीढ़ी के कर्णधार बाड़ । गाँधियो बाबा नवजवानने के आगे लेके चलले त आजादी मिलल । आजो तहरे लोगन के सामाजिक बदलाव खातिर आगे आवे के पड़ी । अब त देश के व्यवस्था में अइसन घुन लाग गइल बाड़ेसन कि मुलुक के खोखला होखे में देर ना लागी ।''

तपेसर के कहल सुन के धीरू जग्गू से कहले -''जग्गू भाई, तपेसर काका के बात पर हमनी के अमल कइल जरूरी बा । जब से सूझे तबसे बूझे । हमनी आजे गाँव के नवहिन के तपेसर काका के दुआर पर बटोर कके संकल्प लीं कि अबसे जात-पाँत, धरम, भाषा से ऊपर उठ के देश के तरक्की आ समाज में एकता आ भाईचारा खातिर काम करब ।''

'' हमनी इहो संकल्प लीं कि कवनो ऑफिस में आज से घूस ना देब आ एकरा के रोके खातिर जुझारू आन्दोलन चलाएब ।''-जग्गू जोश में कहले ।

'' त अब देरी कवना बात के ?'' तपेसर के पुरान आँख में चमक आ गइल रहे। ऊ आगे कहले -''बबुआ लोगन, आजादी के पंचास बरिस का बादो अभी अधे आजादी हाथे लागल बा । पूरा आजादी खातिर अभी तहरा लोग के तबले लड़ाई लड़त रहे के पड़ी, जबले आम आदमी के खुशहाल बनावेवाला महात्मा गाँधी के सपना के भारत ना बन जाव । जब गाँव-गँवई के आदमी-आदमी के चेहरा पर खुशियाली झलके लागे तबे मानल जाई कि देश सही माने में आजाद भइल । हमरा विश्वास बा, तूँ लोग आजे से अपना संकल्प के पूरा करे खातिर काम शुरू कर देब लोग ।''

धीरू आ जग्गू उठके खड़ा होके नया उमंग का साथे घर के राह धइले ।.....
.....सुरूज के गरमी तेज हो गइल रहे ।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी साहित्य संस्थान, पटना के प्रकाशन

1. जोत कुहासा के/आधुनिक भोजपुरी कविता/प्रो. ब्रजकिशोर
2. जनता के पोखरा/कविता/डॉ. विवेकी राय
3. बूँद भर सावन/आधुनिक भोजपुरी कविता/प्रो. ब्रजकिशोर
4. मन/आधुनिक भोजपुरी कविता/दीप्ति
5. लहर-लहर में सावन/गीत आ कविता/डॉ. बसन्त कुमार
6. भोर मुसुकाइल/सामाजिक उपन्यास/विक्रमा प्रसाद
7. सुन्नर काका/आंचलिक उपन्यास/प्राध्यापक अचल
8. दरद के डहर/उपन्यास/भगवती प्रसाद द्विवेदी
9. फुलमतिया/उपन्यास/योगेन्द्र प्रसाद सिंह
10. का लिखी/उपन्यास/डॉ. उषाकर
11. मुट्ठी भर सुख/उपन्यासिका/विक्रमा प्रसाद
12. जिनगी के परछाहीं/कहानी संग्रह/रूपश्री
13. खोंता से बिछुड़ल पंछी/महिला कथाकारन के कहानी संग्रह/सं. रूपश्री
14. धुआँ/कहानी संग्रह/प्रो. ब्रजकिशोर
15. सेसर कहानी भोजपुरी के/सं. प्रो. ब्रजकिशोर
16. लहर के बोल/हास्य-व्यंग्य के कहानी/सं. प्रो. ब्रजकिशोर
17. कथा सरोवर (दू भाग)/सं. प्रो. ब्रजकिशोर
18. गाँव बहुते गरम बा/कहानी संग्रह/कृष्णानन्द कृष्ण
19. प्रश्नचिन्ह/कहानी संग्रह/सूर्यदेव पाठक 'पराग'
20. कथा पुरान/पौराणिक कहानी/प्रो. ब्रजकिशोर
21. माटी के गन्ध/संस्मरण, आ कहानी/प्रो. ब्रजकिशोर/रूपश्री
22. बचपन मोरारजी देसाई के/जीवनी/राजवल्लभ सिंह
23. पंच परमेश्वर/नाटक/रूपान्तरण: प्रो. ब्रजकिशोर
24. मन के दरपन बोले/समीक्षा/सं. राजवल्लभ सिंह
25. कथाकार कृष्णानन्द कृष्ण/समीक्षा/सं. प्रो. ब्रजकिशोर
26. परम सन्त दुनियाराम बाबा/प्रो. ब्रजकिशोर
27. डॉ. विक्की राय : कृतित्व आ व्यक्तित्व/सं. डॉ. आंजनेय आ प्रो. ब्रजकिशोर
28. गृहस्थ कवि रामसेवक/समीक्षा/प्रो. ब्रजकिशोर
29. श्रीविष्णु पुरान/प्रो. ब्रजकिशोर
30. अपराजिता/खण्ड काव्य/प्रो. ब्रजकिशोर
32. सीताहरण/प्रबन्ध काव्य/प्रो. ब्रजकिशोर

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

कर्नाटक के इंजीनियरिंग एवं मेडिकल कॉलेजों में डोनेशन या बिना डोनेशन दिए पेड–सिट पर नामांकन कराने के लिए और इसकी प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता हेतु सम्पर्क करें–

KUMAR & KUMAR

76, CHBS, 3rd Layout, Vijayanagar, Bangalore-560040

पायनियर ट्यूटोरियल्स, महेन्द्रू, पटना–800 006

- ब्रह्मलीन ब्रह्मर्षि देवराहा बाबा के साहित्य के लिए
- डिप्लोमा इंजीनियरिंग की पाठ्य पुस्तकों के लिए
- बी. आई. टी. मेसरा और बिहार इंजीनियरिंग तथा मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश हेतु आयोजित संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा के साधित प्रश्न–पत्रों के लिए
- राज्य लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित विभिन्न नियुक्ति प्रतियोगिता परीक्षाओं में निश्चित सफलता हेतु सर्वोत्तम 'श्रीगाइड' के लिए ।

अपने पुस्तक विक्रेता से कहे या लिखें

रूपश्री प्रकाशन

महेन्द्रू, पटना–800 006

भोजपुरी साहित्य सस्थान, पटना खातिर जे एम कम्प्यूटर, लोहानीपुर, पटना द्वारा मुद्रित आ रूपश्री द्वारा प्रकाशित । सम्पादक – प्रो० बजकिशार